२. तांत्रिक कर्मकाण्ड के बारे में २६८
३. महर्षि यतीन्द्र नक्षत्र सारणी २७४
४. गुरु मंत्र का चयन २७७
५. ग्रह और व्यक्तित्व २७८
६. पाश्चात्य अंक दर्शन २८८
७. अंग्रेजी मूल्य तालिका २८९
८. काकणी गणना २९०

SABAR MANTRA HINDI

issuu.com/abdul28/niali/odisha

१ प्रारम्भिक ज्ञातव्य

शावर-मन्त्रों के विषय में

जनश्रुति है कि कलियुग के आरम्भ होने पर देवाधिदेव महादेव शिवजी ने वेदोक्त मन्त्रों को कील दिया, जिसके कारण वे अप्रभावी हो गये; परन्तु यथार्थ में उनकी सामर्थ्य समाप्त नहीं हुई, केवल यही अन्तर पड़ा कि यदि उन्हें उत्कीलन-विधि से उत्कीलित कर दिया जाय तो वे अपना चमत्कार प्रदर्शित करने में समर्थ हो जाते हैं।

मन्त्रों की उत्कीलन-विधि का ज्ञान बड़े विद्वानों तक ही सीमित था, अतः सामान्य मन्त्र-साधकों को उनके साधन में कठिनाइयाँ होने लगीं। ऐसी स्थिति में कतिपय सिद्ध महापुरुषों द्वारा शावर-मन्त्रों की रचना की गई। ये मन्त्र लोक-भाषाओं में रचे गये थे और इन्हें सिद्ध करने हेतु उत्कीलनादि की प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता भी न थी, अतः ये बड़े लोकप्रिय हुए और इनका प्रचार-प्रसार भी खूब हुआ।

शावर-मन्त्रों के रचयिता सिद्ध-पुरुष ही रहे होंगे, इसमें तो सन्देह नहीं, परन्तु वे शास्त्रज्ञ अथवा विद्वानों की कोटि में रक्खे जाने के योग्य भी रहे हों, इस सम्बन्ध में अलग-अलग मत हैं। लिपिबद्ध न किये जाने के कारण ये मन्त्र गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से केवल कण्ठ-निवासी ही बने रहे। आरम्भ में बहुत समय तक विद्वानों को इनके महत्व का ज्ञान नहीं हो सका, परन्तु कालान्तर में इनका प्रभाव प्रकट होते हुए प्रत्यक्ष देखा गया, तो वे भी इनका महत्व स्वीकार करने को बाध्य हुए। फलतः इन मन्त्रों के संकलन का कार्य भी आगे बढ़ा।

प्रस्तुत प्रकरण में मन्त्र-साधना सम्बन्धी प्रारम्भिक-ज्ञातव्य विषयों का उल्लेख किया जा रहा है। इनका सम्यक्-ज्ञान होने पर ही साधक को मन्त्र-साधन में सफलता प्राप्त हो सकती है।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (१)

प्रसिद्ध है कि कलियुग में महादेवजी ने सभी मन्त्र कील दिये हैं, अतः वे फलदायक सिद्ध नहीं होते। परन्तु यदि उनका उत्कीलन कर दिया जाय तो वे सद्य फलप्रद सिद्ध होते हैं। अतः यहाँ उत्कीलन की विधियाँ लिखी जाती हैं। किसी भी मन्त्र का साधन करने से पूर्व उसका नियमानुसार उत्कीलन कर लेने से सिद्धि एवं सफलता शीघ्र तथा अवश्य प्राप्त होती है।

जिस मन्त्र को जपना हो उसे अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर १०८ बार लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उसका पूजन करके, ब्राह्मण भोजन करायें। फिर एक मिट्टी के पात्र में पानी भर कर मन्त्र-लिखित भोजपत्रों को उसमें डालते जायें अथवा उन्हें किसी नदी की धारा में प्रवाहित करदें तो उस मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है।

अष्टगन्ध में निम्नलिखित वस्तुओं की गणना की जाती है—

१. गोरोचन, २. कपूर, ३. हाथी का मद, ४. अगर, ५. कस्तूरी, ६. केशर, ७. लाल चन्दन और ८. श्वेत चन्दन।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (२)

मिट्टी द्वारा पुरुष के आकार वाली इष्टदेव की प्रतिमा बनायें, फिर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। तदुपरान्त शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर मन्त्र लिखकर, उसे प्रतिमा की छाती में लगाएँ तथा एक मास तक उसका धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें। तदुपरान्त गुरु की आज्ञा लेकर उस मन्त्र को तो स्वयं लेलें तथा प्रतिमा को नदी में बहाकर ब्राह्मण भोजन करायें। फिर मन्त्र का जप करें तो वह सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र-उत्कीलन विधि (३)

मन्त्रोत्कीलन के लिए १० संस्कार करने का भी विधान है, उसके लिए हमारी पुस्तक 'हिन्दू तन्त्र शास्त्र' का अध्ययन करें।

नजरबन्दी का मन्त्र (१)

मन्त्र (१)—"ॐ नमो भगवते वासुदेव नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

https://t.me/pdfissue.com/abdul23/nial/pdf

साधन-विधि—

रविवार के दिन अंकोल की लकड़ी लें, गोल चौका देकर, धूप-दीप, नैवेद्य का भोग लगाकर, १०८ बार इस मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

तमाशा करते समय देखने वाले लोगों की नजर बाँधने के लिये, तमाशा करने से पूर्व इस मन्त्र को पढ़ कर, जिन लोगों पर अपनी दृष्टि घुमायें, उनकी नजर बँध जाय।

नजरबन्दी का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो वटुकी चामुण्डी ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

पद्म नाल पर क्वारी कन्या के हाथ से कते सूत को लपेट कर १०८ बार मन्त्र का जप करे तो सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

पहले मन्त्र के अनुसार।

नजरबन्दी की गोली (१)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासूकी नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

अंगूर की डाली, शशा की बीट, थूहर का पत्ता, बहड़े की छाल तथा पटोल पत्र (परवल के पत्ते)—इन पांचों को भेड़ के मूत्र में पीस कर गोली बांधें। फिर गूगल की धूनी दें तथा दीपक जलायें। दूध-बूरा मिलाकर भोग धरें तथा पुष्प चढ़ावें। फिर १०८ बार मन्त्र का जप करके, गोली को छाया में सुखा कर रख लें।

प्रयोग-विधि—

खेल-तमाशा दिखाते समय सर्व प्रथम "ॐ पानी बल स्वाहा।"

इस मन्त्र को विभूति पर ७ बार पढ़ कर, उसे अपने मस्तक पर लगायें, फिर उक्त गोली को मेंहदी की भाँति हाथ पर लगाकर यह कहें कि—"फलाना (अमुक) आये"—तो दर्शकों को वही व्यक्ति आता दिखाई देगा।

अथवा—

गोली को किसी के गले से लगायें तो रुण्ड सा दिखाई दे।

अथवा—

गोली को कौए के पंख से लगायें तो कौआ दिखाई दे।

अथवा—

गोली को कमल की नाल में मल कर ऊँचा करें तो आदमी ऊँचा दिखाई दे और नीचा रक्खें तो उल्टा दिखाई दे।

अथवा—

गोली को नीबू के पत्ते में लगायें तो वह बिच्छू जैसा दिखाई दे।

अथवा—

गोली और हरताल, इन दोनों को मिलाकर अँगुली में लगा दें तो खोवा दिखाई दे।

अथवा—

मुर्गे के पंख पर गोली को मल कर उसे हाथ में लें तो मुरगावी दिखाई दे।

अथवा—

गोली को अन्न पर मलें तो रत्न दिखाई दे।

issuu.com/abdul23/nial/odisha

अथवा—

गोली को करंज बीज पर मल कर उसे मुँह मे रक्खे तो पेट में पानी भरने और उसे बाहर निकालने में आनन्द हो।

अथवा—

गोली को हाथ, नाक पर मलें तो अदृश्य होकर भीड से बाहर निकल जाय।

अथवा—

गोली को सारे अंग पर लगायें तो हाथ-पाँव आदि सब अंग टूटे हुए से दिखाई दें और जब उस लेप को पानी से धो दें तो सब जुड़े हुए दीखें।

इस प्रकार एक ही गोली के प्रयोग से अनेक प्रकार के चमत्कार प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

नजरबन्दी की गोली (२)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासुकी नागराजाय गोप कुण्डली चलनानिनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

गोदन्ती, हरताल, आँवला, केला की जड़, मूंगभीगे का अंगूर, सोलह पर्ण, तथा शृंग शाख—इन छहों वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर भेड़ के मूत्र में पीस कर गोली बाँध लें तथा उसे पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित कर, छाया में रख कर सुखालें।

प्रयोग-विधि—

उक्त गोली को घिस कर काँसे के पात्र पर लगाने से पाताल की देवी और देवता दिखाई देते हैं।

अथवा—

गोली और सरसों को गोमूत्र में पीस कर शरीर पर मलने से बड़ा आकार छोटा दिखाई देता है।

अथवा—

गोली और सरसों को बकरी के मूत्र में पीस कर शरीर पर लगाने से छोटा आकार बड़ा दिखाई देता है।

अथवा—

गोली को धतूरे के बीज तथा दूध के साथ पीस कर अपनी अँगुली पर मलें, फिर वह अँगुली जिसे दिखाई जायेगी, वह नंगा होकर नाचने लगेगा।

मन्त्र-तन्त्र सिद्धिकर मन्त्र

मन्त्र—"ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः जगदुत्पत्ति स्थिति प्रलय कराय ब्रह्मा हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दात्तात्रेयाय नमः तन्त्रान् सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

घी का दीपक जलाकर, धूप देकर तथा चन्दन इत्यादि चढ़ाकर किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर २१ दिन तक नित्य १०८ की संख्या में जप करते रहने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को सिद्ध हो जाने के उपरान्त जिस मन्त्र अथवा तन्त्र का साधन एवं प्रयोग किया जाता है, वह सफल होता है।

इन्द्र जाल का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुकान् दर्शय-दर्शय सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन एव प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। किसी भी इन्द्रजाल के कौतुक को करने से पूर्व इस मन्त्र का उच्चारण कर लेने से कार्य में सफलता मिलती है।

रसायन एक्ष

https://www.facebook.com/groups/1753...

मन्त्र—"ॐ नमो हरिहराय रसायण सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर इस मन्त्र को २१ दिनों तक नित्य १०८ की संख्या में जपने से यह सिद्ध हो जाता है। इसे मन्त्र के प्रारम्भ में उच्चारण करने से रासायनिक कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

मूठ को वापिस भेजने का मन्त्र

मन्त्र—"काला कलुवा चौंसठ वीर मेरा कलुवा मारा तीर जहाँ को भेजूँ उहाँ जाय माँस मच्छी को छूवन न जाय अपना मारा आपही खाय चलत वाण मारूँ उलट मूँठ मारू मार मार कलुवा तेरी आस चार चौमुखा दिया न बाती जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनो माँ का दूध पीया हराम है।"

साधन-विधि—

सात मंगलवार तक प्रति दिन २१ बार इस मन्त्र का जाप करें। घी का दीपक जला कर रक्खें तथा अग्नि पर गुग्गुल डालें। लौंग का जोड़ा, फूल तथा मिठाई रक्खें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

यदि किसी ने अपने ऊपर मूठ चलाई हो तो इस मन्त्र को पढ़कर उसे उल्टी भेज दें।

इसी मन्त्र द्वारा आकर्षण तथा वशीकरण के कार्य भी सिद्ध होते हैं। इस हेतु सुपारी की छाल पर २१ बार इस मन्त्र को पढ़कर पान में रखकर खिलादें तो साध्य-व्यक्ति आकर्षित अथवा वशीभूत होता है।

यह मन्त्र रोग-परीक्षा में भी प्रयुक्त होता है। इसके लिए कच्चे सूत के धागे द्वारा रोगी को सिर से पाँव तक नाप कर, २१ बार मन्त्र फूँकें, फिर डोरा को पुनः नापें। उस समय यदि डोरा बढ़ जाय तो समझें कि "रोगी पर आसेब का खलल है" और यदि घटे तो 'शारीरिक-रोग' समझना चाहिए।

हाजरात का मन्त्र

मन्त्र—"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनु दीन पैगंबर दुनी तेरी सादात फुरो वादा नामुरादी वेवुन यादी तुर्क मा पीर ताइया सिलार देखूँ तेरी शक्ति वेग बांधि ल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलुवा ब्रह्मा

अठोत्तर सैं शाकिनी कमण दुरामन छलछिद्र प्रेत चोर चावर अगिया बेताल बेगी बाँधि ल्याव जो न बाँधि ल्यावें तो दुहाई सुलेमान पैगंबर की।"

साधन-विधि—

शुक्रवार को आरम्भ करके तैल, फुलेल, लोंग, धूप एवं मिठाई से पूजन करके नित्य २१ मन्त्र जपे तो ४० दिन में सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

जब हाजरात करनी हो तो सर्व प्रथम मिट्टी से जगह लीपकर, चावल की मस्जिद बनायें। फिर कपास की बत्ती बनाकर, पट्टे पर त्रिसूल लिख कर एक क्वारी कन्या को स्नान करा के उसे स्वच्छ वस्त्र पहना कर सामने बैठायें। फिर चावलों को अभिमन्त्रित करके उस कन्या पर मारे तथा उसके मस्तक पर दीपक रख कर, जो पूछना चाहे, वह पूछे तो उसके द्वारा सत्य-सत्य उत्तर मिलेगा।

प्रत्यक्ष हाजरात का भाषा मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो कामाख्यायै सर्व सिद्धिदायै अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जिस कार्य की इच्छा से मन्त्र का जप करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

issuu.com/abdul23/nialli/odisha

मन्त्र-जप से पूर्व निम्नलिखित संकल्प-वाक्य का उच्चारण करके कराङ्ग-न्यास तथा हृदयादि-न्यास करना चाहिए। अन्त में ध्यान करके, मन्त्र--जप करना चाहिये।

संकल्प-वाक्य—"अस्य मन्त्रस्य वह्निक ऋषि जगती छन्दः कामाख्या देवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तं कीलकं 'अमुक' कर्मणि जपे विनियोगः।"

विशेष—

उक्त संकल्प वाक्य में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जो कार्य करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

अथ कराङ्ग न्यास—

इसके बाद निम्नानुसार कराङ्ग न्यास करें—

"ॐ नमो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा।
सर्व सिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वौषट्।
अमुक कर्म अनामिकाभ्यां हुँ।
कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा।
करतल कर पृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।"

अथ हृदयादि न्यास—

इसके बाद निम्नानुसार हृदयादि न्यास करें—

"ॐ नमो हृदयाय।
कामाख्यायै शिरसे स्वाहा।
सर्व सिद्धिदायै शिखायै वषट्।
अमुक कर्म कवचाय हुँ।
कुरु कुरु नेत्र त्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्।"

अथ ध्यान—

इसके उपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

"योनि मात्र शरीराया कंगुवासिनि कामदा।
रजः स्वला महातेजा कामाक्षी ध्येयतां सदा।।"

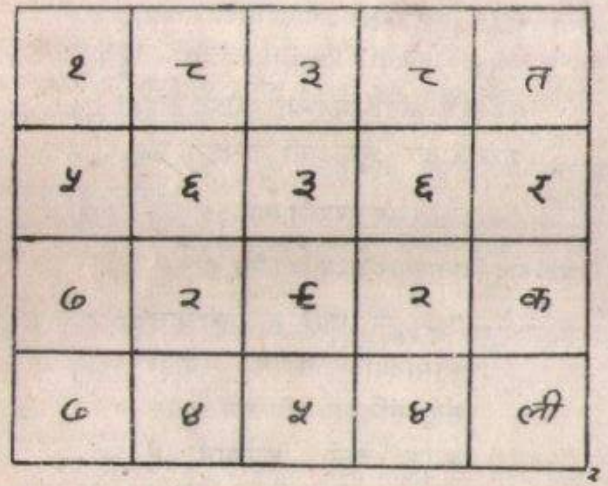
साधन-विधि—

पूर्वोक्त मन्त्र को १०००० की संख्या में जप कर १०० गुड़हल के फूलों की आहुति देकर होम करें। फिर होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन कर, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र-जप के बाद सकल्प का पानी फूलों पर डालें।

प्रयोग-विधि—

हाजरात करते समय पहले नीचे के चित्र में प्रदर्शित यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर लाल चन्दन, केशर आदि से लिखना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—



(हाजरात का यन्त्र)

issuu.com/abdul23/nial/odisha

रुई में मेढल की राख मिलाकर बत्ती बनायें। उसे तेल के दीपक में रख कर, दीपक का पूजन करके, उसके आगे आठ या दस वर्ष की आयु वाले किसी उच्चवंश एवं देवतागण बालक अथवा बालिका को बैठायें। फिर दीपक के आगे यन्त्र रख कर उसका पूजन करें। फिर यन्त्र उस बालक या बालिका को दें और बालक को हथेली में मेढल की राख तैल में सान कर लगावें। फिर उससे जो कुछ पूछना हो, वह पूछें तो वह सच-सच बतायेगा।

चौकी चढ़ाने का मन्त्र (१)

मन्त्र—(१) "ॐ नमो आं हां कंत जुगराज फटंत, कार्या जिस कारन जुगराज मैं तो कूँ ध्याया हांक मारता जुगराज आया गाजंत आया घोरंत आया निरस के फूल लेता उडंता आया और की चौकी उठाता आया आपकी चौकी बैठाता आया, और का किवाड़ तोड़ता आया, अपना किवाड़ मांड़ता आया, बाँध बाँध किसकों बाँध, भूत कों बाँध, प्रेत कों बाँध, उडंत कों बाँध, राडंत कों बाँध, जोगिनी कों बाँध, देव कों बाँध, तिरेसठ कला कों बाँध, चौंसठ जोगिनी कूँ बाँध, आकास की परी कों बाँध, धरती कों बाँध, डाकिनी कों बाँध, खेंचरी कों बाँध, को नाटक कों बाँध, छल कों बाँध, छिद्र कों बाँध, कीया कों बाँध, अपनी कों बांध, पराई कों बाँध, मैली कों बाँध, कुचैली कों बाँध, स्याह कों बाँध, सफेद कों बाँध, काली कों बाँध, पीली कों बाँध, रे गढ़ गजनी महम्मदा वीर बिसर जाय मद खाय तेरा, तीसों रोजा हलाल उलटि मार, पटकि पछाड़, कबजा चढ़ाय मुख बुलाय, शशि वाय शब्द साँचा, पिंड काचा फुरी मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

साधना एवं प्रयोग विधि—

नीचे दिये गये मन्त्र संख्या २ के अनुसार।

चौकी चढ़ाने का मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो नाहरसिंह नारी का जाया, याद किया सों जल्दी आया, पाँच पान का बीड़ा मध की धार, चाल

चाल नाहरसिंह कहां लगाई एती बार देसूं केसर कूँ मुर्गा की ताज कड़ो, देसूँ मद्य की धार, आराधो आयो नहीं कहाँ लगाई एती बार। देखूँ नाहरसिंह वीर तेरा कोया, अमुकी का घट पिण्ड बाँध मेरे हाथ दीया, मारता का हाथ बाँध, बोलता की जीभ बाँध, झांकता का नैन बाँध, हीया बूका बकडो बकडो बाँध, बोटी बोटी बाँध, पकड़ लटी पछाड़ मार, मेरा पग तले ला पछाड़, चढ़तो देसूँ केसर कूकडो उतरतां देसूँ मद्य की धार, इतना दूँ जब उतर जो खोल जो धोरे-धार, हमारा उतारा उतरजो, और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिण्डाल शब्द साँचा, पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विशेष—

उक्त मन्त्रों में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, मुर्गा की केसर एक चने के बराबर, गूगल तथा शहद मिलाकर गोली बाँधे। पूजन के समय उसे आग पर रक्खें। ५ बताशे, पान का बीड़ा, नारियल, लौंग, इलायची, सुपारी तथा भोग रक्खें। फिर दीपक जलाकर उसके आगे १०८ की संख्या में मन्त्र का जाप करें। इस प्रकार नित्य सात दिनों तक मन्त्र जप करने से सिद्ध हो जाता है।

बाद में हर होली, दिवाली तथा ग्रहण के समय इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिये।

मसान जगाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मूज बनी का बान, मूवा मुर्दा बोले नहीं तो माया महावीर की आण, शब्द सांचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पीने की दारू (शराब) एक सेर, चमेली का फूल, लोबान की धूप, छाड़, छबीला, कपूर कचरी, इत्र तथा सुगन्ध इन वस्तुओं को लेकर श्मशान में जा बैठे। वहाँ श्मशान के मुर्दे के ऊपर दारू की धार छोड़े तथा धूप देकर फूल बखेर दें। फिर उससे कुछ दूर हट कर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़े, तदुपरान्त पुनः दारू की धार दे। श्मशान हाहाकार करता हुआ जग पड़ेगा।

अदृश्य करण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ हुँ फट् कालि कालि मांस शोणितं खादय खादय देवि मा, पश्यतु मानुषेति हुँ फट्।"

साधन-विधि—

दीपावली अथवा होली की रात्रि अथवा ग्रहण पर्व में ३ लाख की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आक, सेमल, कपास, रेशम तथा कमल सूत्र—इन पांच वस्तुओं की ५ अलग-अलग बत्तियाँ बनायें, फिर उन्हें ५ मनुष्यों की खोपड़ियों में अंकोल का तेल भर कर अलग-अलग जलायें तथा उन पाँचों दीपकों की लौ से काजल पारें।

विशेष—

उक्त क्रिया किसी शिवालय अथवा श्मसानभूमि में करनी चाहिए। काजल पर जाने पर, पाँचों काजलों को एकत्र कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपनी आँखों में आँजें तो स्वयं तो सबको देख सकेंगे, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में अदृश्य बने रहेंगे अर्थात् उक्त काजल को अपनी आँखों में लगाने वाला व्यक्ति अन्य लोगों को दिखाई नहीं देता।

चाल नाहरसिंह कहां लगाई एती बार देसूं केसर कूँ मुर्गा की ताज कड़ो, देसूँ मद्य की धार, आराधो आयो नहीं कहाँ लगाई एती बार। देखूँ नाहरसिंह वीर तेरा कोया, अमुकी का घट पिण्ड बाँध मेरे हाथ दीया, मारता का हाथ बाँध, बोलता की जीभ बाँध, झांकता का नैन बाँध, हीया बूका बकडो बकडो बाँध, बोटी बोटी बाँध, पकड़ लटी पछाड़ मार, मेरा पग तले ला पछाड़, चढ़तो देसूँ केसर कूकडो उतरतां देसूँ मद्य की धार, इतना दूँ जब उतर जो खोल जो धोरे-धार, हमारा उतारा उतरजो, और का उतारा उतरे तो नाहरसिंह तू सही चिण्डाल शब्द साँचा, पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विशेष—

उक्त मन्त्रों में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां साध्य के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, मुर्गा की केसर एक चने के बराबर, गूगल तथा शहद मिलाकर गोली बाँधे। पूजन के समय उसे आग पर रक्खें। ५ बताशे, पान का बीड़ा, नारियल, लौंग, इलायची, सुपारी तथा भोग रक्खें। फिर दीपक जलाकर उसके आगे १०८ की संख्या में मन्त्र का जाप करें। इस प्रकार नित्य सात दिनों तक मन्त्र जप करने से सिद्ध हो जाता है।

बाद में हर होली, दिवाली तथा ग्रहण के समय इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिये।

मसान जगाने का मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मूज बनी का बान, मूवा मुर्दा बोले नहीं तो माया महावीर की आण, शब्द सांचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पीने की दारू (शराब) एक सेर, चमेली का फूल, लोबान की धूप, छाड़, छबीला, कपूर कचरी, इत्र तथा सुगन्ध इन वस्तुओं को लेकर श्मशान में जा बैठे। वहाँ श्मशान के मुर्दे के ऊपर दारू की धार छोड़े तथा धूप देकर फूल बखेर दें। फिर उससे कुछ दूर हट कर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़े, तदुपरान्त पुनः दारू की धार दे। श्मशान हाहाकार करता हुआ जग पड़ेगा।

अदृश्य करण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ हुँ फट् कालि कालि मांस शोणितं खादय खादय देवि मा, पश्यतु मानुषेति हुँ फट्।"

साधन-विधि—

दीपावली अथवा होली की रात्रि अथवा ग्रहण पर्व में ३ लाख की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आक, सेमल, कपास, रेशम तथा कमल सूत्र—इन पांच वस्तुओं की ५ अलग-अलग बत्तियाँ बनायें, फिर उन्हें ५ मनुष्यों की खोपड़ियों में अंकोल का तैल भर कर अलग-अलग जलायें तथा उन पाँचों दीपकों की लौ से काजल पारें।

विशेष—

उक्त क्रिया किसी शिवालय अथवा श्मसानभूमि में करनी चाहिए। काजल पर जाने पर, पाँचों काजलों को एकत्र कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपनी आँखों में आँजें तो स्वयं तो सबको देख सकेंगे, परन्तु अन्य लोगों की दृष्टि में अदृश्य बने रहेंगे अर्थात् उक्त काजल को अपनी आँखों में लगाने वाला व्यक्ति अन्य लोगों को दिखाई नहीं देता।

लहरि जगाने के मन्त्र (१)

मन्त्र—"छव मास की परी डंककयाकी करार गराने न तेरी मछिहि काग आवत कागा चरइ भीटे पानि आपरई पीठे सवाभार विष निजवडं अपने उडीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा आज्ञा गिद्ध उड़इ ऊपर ईश्वर बाहन भय ठांवहिषंव नोना परिहाथ षंडान के परिडंक उठि ठाढि भइ जागु जागु ईश्वर डुहुरे डंकहाडं कंडा डिगौ बंजरहू लागिकाइ देहांक देत आवै नोना योगिनि डंक उठै बिहसाइते साते समुद्रे माझे षंडी कबीर ववाठे जीव धरवरो आमन्त्रि रहहि जगावै नोना योगिनि पारवती जागु परमइ शतहुहुँरे डंक।"

लहरि जगाने के मन्त्र (२)

मन्त्र—"वोह परोस रात सुनु सुनु काल डंक डंक मरै तो मैं मारो सात गद सुरल पांजरराषु एकका काल महेश समन्त्र यहाँ आप कह काटे तौ मनमह चुहुकीके थुकि डारीं आन के काटे तौ हाथ सें ॐ चुहुकार अर्धकार कनुविशनार षार छिछी विशनाहि आपु कह काटे भा आनकह काटे तौ पढि डंक पोछि देई।"

पादुका-साधन मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते रूद्राय हरितगदाधराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।"

साधन-विधि—

होली दीवाली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय ३ लाख संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

कौऐ की आँख, हृदय और जीभ—इनके साथ मैनसिल, सिन्दूर कौंच, मालती के फूल, रूद्रजटा तथा बिदारीकन्द—इन सबको समभाग पीस कर उक्त सिद्ध मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित कर अपने पाँवों पर लेप करें तो एक सहस्र योजन तक पैदल चलने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। □□

issuu.com/abdul23/nial/odisha

२ | आकर्षण तथा मोहन प्रयोग

आकर्षण तथा मोहन प्रयोगों के विषय में

'आकर्षण' का अर्थ है—किसी को अपनी ओर आकर्षित करना और 'मोहन' का अर्थ है—किसी को अपने ऊपर मोहित करना। ये दोनों क्रियाएँ वशीकरण की ही अङ्गभूता हैं। अर्थात् आकर्षण एवं मोहन क्रियाओं के द्वारा साध्य-व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित एवं मोहित करके अपने वश में किया जा सकता है।

प्रस्तुत प्रकरण में विभिन्न प्रकार के आकर्षण तथा मोहन सम्बन्धी प्रयोगों का उल्लेख किया गया है।

स्मरणीय है कि जब किसी भी सामान्य उपाय से कोई व्यक्ति स्त्री या पुरुष, राजा या दुश्मन अपने प्रति आकर्षित न हो सकें और उस स्थिति में स्वयं को मानसिक, शारीरिक अथवा किसी अन्य प्रकार की हानि होने की सम्भावना हो, उस समय इन मन्त्रों का प्रयोग मनोभिलाषा की पूर्ति करता है।

सामान्यतः इन प्रयोगों का उपयोग जीवन रक्षा, स्वार्थ-साधन अथवा विपत्ति से त्राण पाने के लिये किया जाता है। अतः जब अनिवार्य आवश्यकता अनुभव हो, तभी इन प्रयोगों का साधन करना चाहिये। किसी पर-स्त्री के प्रति इन प्रयोगों का साधन तभी करना चाहिये, जब कि उसके बिना स्वयं की प्राण-रक्षा असम्भव अनुभव होती हो। दुराचार अथवा किसी को लज्जित करने के उद्देश्य से इन प्रयोगों का साधन वर्जित है।

आकर्षण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ आकर्षय।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

इस मन्त्र को अर्द्ध रात्रि के समय आकाश के नीचे एकान्त में खड़ा होकर १२०० की संख्या में जपने तथा साध्य-स्त्री का स्मरण करने से वह दो या तीन दिन में साधक के प्रति आकर्षित हो जाती है।

आकर्षण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो आदि रूपाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन विधि –

ग्रहण, दीपावली अथवा होली को १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि –

(१) काले धतूरे के पत्ते का रस तथा गोरोचन—इन दोनों को मिलाकर श्वेत कनेर की कलम से भोजपत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को लिखकर उसे खैर के अंगारों पर तपाये। इस विधि से साध्य-व्यक्ति यदि १०० योजन दूर चला गया हो तो भी वह आकर्षित होकर समीप चला आता है।

https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

(२) अनामिका अँगुली के रक्त से सफेद कनेर की कलम द्वारा भोज-पत्र के ऊपर उक्त मन्त्र को साध्य-व्यक्ति के नाम सहित लिख। फिर उसके नाम से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, भोजपत्र को शहद में डाल दे तो गया हुआ व्यक्ति आकर्षित होकर लौट आता है।

अथवा—

(३) मनुष्य की खोपड़ी में गोरोचन तथा केसर द्वारा मन्त्र लिखकर तीनों समय खैर की अग्नि में तपाने से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

आकर्षण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

मंगलवार से प्रारम्भ कर, इस मन्त्र को १०००० की संख्या में जपना आरम्भ करें। जप पूर्ण हो जाने पर जप संख्या का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें।

प्रयोग-विधि—

नीचे लिखे मन्त्र संख्या ४ के अनुसार।

आकर्षण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते रुद्राय एदृष्टि लेखि नाहरः स्वाहा दुहाई कंसासुर की जूट जूट फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

किसी भी मंगलवार से आरम्भ कर इस मन्त्र का २१ दिन या १० दिन में अथवा ११ मंगलवारों में कुल १०००० की संख्या में जप करें। मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर, जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें।

परीक्षा-विधि—

उक्त दोनों मन्त्रों (संख्या ३ तथा संख्या ४) की परीक्षा करने की विधि एक जैसी है, जो इस प्रकार है—

एक सरकण्डे को बीच में से चीर कर दो लम्बे टुकड़े करलें तथा दोनों सरकण्डों के सिरों को दो मनुष्य अपने दोनों हाथों में अलग-अलग पकड़ लें। फिर चूहे के बिल की मिट्टी, सरसों और बिनौला—इन तीनों का चूर्ण कर, उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सरकण्डों के टुकड़ों पर मारें। इस क्रिया से यदि वे दोनों टुकड़े एक दूसरे की ओर झुकते हुए आपस में मिल जायं तो समझें कि मन्त्र सिद्ध हो गया है।

प्रयोग-विधि—

जिस व्यक्ति का आकर्षण करना हो, वह यदि परदेश में हो तो उसके पहनने के वस्त्र पर पूर्वोक्त वस्तुओं के चूर्ण को अभिमन्त्रित करके

मारे तो जितने दिन का यात्रा-मार्ग होगा, उतने दिनों के भीतर ही साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास चला आयेगा।

आकर्षण मन्त्र (५)

मन्त्र–"ॐ हों हीं हां नमः"

साधन एवं प्रयोग विधि–

इस मन्त्र का प्रतिदिन १०००० की संख्या में जप करते हुए साध्य-व्यक्ति का ध्यान करना चाहिए। नित्य १५ दिनों तक इस प्रकार साधन करते रहने से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

स्त्री आकर्षण मन्त्र

मन्त्र–"ॐ चामुण्डे तरुततु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।"

विशेष–

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकाय' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि–

इस मन्त्र को तीनों सन्ध्या-काल में एक-एक हजार की संख्या में २१ दिनों तक जपना चाहिये।

प्रयोग-विधि–

(१) उत्तर दिशा की ओर मुँह करके लाल चन्दन अथवा लाख द्वारा लाल वस्त्र के ऊपर इस मन्त्र को लिखकर पूजन करें, तदुपरान्त उसे पृथ्वी में गाढ़ कर २१ दिनों तक [illegible] रहें। इस प्रयोग से मानवती वैरिणी-स्त्री भी साधक के समीप खिंची चली आती है।

अथवा–

(२) अर्जुन-वृक्ष के बाँदा को आश्लेषा नक्षत्र में लाकर, बकरी के मूत्र में पीस कर, तथा उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाय, वह आकर्षित होकर चली आती है।

अथवा–

(३) काले सर्प के फन को काट कर चूर्ण करें, फिर उसे उक्त मन्त्र पढ़ते हुए अग्नि में डालें तथा उसके धुएँ की धूप अपने अंग में लें। जिस स्त्री का नाम लेकर मन्त्र पढ़ा जायेगा, वह आकर्षित होकर समीप चली आयेगी।

सर्व मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र–"पद्मनी अंजन मेरा नाम, इस नगरी में पैस कै मोहूं सगरा गाम, न्याव करन्ता राजा मोहूं, फरस बैठा पंच मोहूं, पनघट की पनिहार मोहूं, इस नगरी में पैस के छत्तीस पवन मोहूं, जो कोई मार मार करन्त आवै, ताहै नाहरसिंह वीर बायां पग के अँगूठा तरे घेर घेर लावे, मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा, सत्त-नाम आदेस गुरू का।"

साधन-विधि–

सात शनि, रविवार को रात्रि के समय नाहरसिंह का विधि पूर्वक पूजन करे। दीप, धूप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान, सुपारी तथा लौंग से १०८ मन्त्र जपे। प्रत्येक मन्त्र के साथ पान, सुपारी, शक्कर तथा गूगल को घृत में सान कर अग्नि में होम करता जाय तथा ब्रह्मचर्य से रहे। इस विधि में मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि –

बन कपास की रुई में औंगा (अपामार्ग) की जड़ लपेट कर बत्ती बनाये और उससे काजल पारे। उस काजल को ७ बार मन्त्र द्वारा अभि-मन्त्रित कर अपनी आँखों में आँज कर जिस स्थान पर अथवा गाँव में जाये, वहाँ के सब स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा वशीभूत हों और सेवा में लगे रहें। पण्डितों के लिए इस अंजन का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है।

सर्व ग्राम मोहिनी मन्त्र

मन्त्र–"जती हनुमन्त कनेरी मेरे घट पिण्ड का कौन है वैरी छत्तीस पवन मोहि मोहि जोहि जोहि दह दह मेरी भक्ति

गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्त नाम आदेस गुरू का।"

साधन-विधि—

पहले शनिवार से आरम्भ करके ६ दिन तक हनुमान जी का धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करके नित्य १४४ की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

चौराहे से ७ कंकड़ी लाकर, पनघट के कुएँ पर जाकर उन कंकड़ियों को मन्त्र द्वारा १४४ बार अभिमन्त्रित करके उसी कुएँ में डाल दें। फलतः उस कुएँ का पानी जो भी पियेगा, वह साधक के प्रति मोहित एवं वशीभूत बना रहेगा।

सभा मोहिनी सुर्मा

मन्त्र—"कालू मुख धोयो करूँ सलाम मेरी आँखों में सुर्मा बसे जो देखे सो पांयन पड़े दुहाई गौसुल आजमदस्तगीर को छू।"

साधन-विधि—

सवा लाख गेहूं के दानों पर इस मन्त्र को पढ़े। प्रत्येक दाने पर एक-एक मन्त्र पढ़ना चाहिए। फिर उनका आटा पिसवा कर, कढ़ाई में घी-शक्कर मिलाकर, हलुआ बनायें तथा गौसुल आजमदस्तगीर की नियाज दिलाकर, उस हलवे को स्वयं ही खाकर तथा सुर्मे को उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर अपनी आँखों में आँज कर राज-दरबार अथवा किसी सभा आदि में पहुंचे तो देखते ही वहाँ के [illegible]

मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेस गुरू का मोहनी जगमोहनी मोहनी मेरो नाम। ऊँचे टीले हूं बसूँ मोहूं सगरो गाम। ठग मोहूं, ठाकुर मोहूं, बाट का बटोही मोहूं, कुवा की पनिहार

मोहूं, महलों बैठी राणी मोहूं, जोहि-जोहि वां वां पग तरे देहु गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

दीपावली की रात को दीपक के सामने धूप देकर मिठाई रक्खें तथा १४४ बार मन्त्र को पढ़े तो यह सिद्ध हो अथवा रविवार से आरम्भ करके प्रतिदिन २१ बार, २१ दिनों तक मन्त्र का जप करे तो भी सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

पहले चौराहे की रेत पर सात बार मन्त्र पढ़कर, उससे अपने मस्तक पर बिन्दी लगाये, फिर एक गुड़ की डेली पर २१ बार मन्त्र पढ़े तथा जिसे मोहित करना हो, उसका नाम लेकर, गुड़ की डेली को कुएँ में डाल दें तो जब वह व्यक्ति उस कुएँ का पानी पियेगा, तब वह तुरन्त ही साधक के प्रति मोहित तथा आकर्षित हो जायेगा।

स्त्री मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली चंचती जै जैकार दनरन चौंप भरे अमुकी छाती छार छार ते न हटै देतां घर वार मरे तो मसान लोटे जीवे तो पांउ पलोटे वाचा बाँध सूतो हो तो जगाइ लाव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ठः ठः ठः [illegible]।"

[illegible]त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम [illegible] करना चाहिए।

[illegible]योग विधि—

[illegible]र के दिन जो मरा हो, उसकी चिता से ३ मुट्ठी राख लाकर [illegible] से आरम्भ करके ७ दिन तक नित्य १४४ की संख्या में उक्त [illegible]रें तथा धूप, दीप, नैवेद्य रक्खें। श्मशान की राख पर

दीपक रक्खें तथा उसी राख में से थोड़ी सी लेकर, उसे मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य-स्त्री पर डाला जायगा, वह मोहित होकर साधक के पास चली आयेगी।

इस प्रयोग की परीक्षा भैंस पर कर लेनी चाहिए। अभिमन्त्रित राख भैंस पर डालने से वह साधक के पीछे-पीछे चल देगी।

स्त्री मोहिनी तन्त्र (२)

मन्त्र—"अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहनी मोहे जग संसार, मुझे करे मार मार, उसे मेरे बाँये कदम तले डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर बज्र की वाण, बहवक लाइलाइ अल्ला है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

शनिवार के दिन घी का दीपक जला कर उसके आगे फूल, मिठाई रख कर लोबान की धूनी दे तथा १०१ बार मन्त्र पढ़े। दूसरे शनिवार को फिर साध्य-स्त्री के पाँव के नीचे मिट्टी पर ७ बार मन्त्र पढ़कर, उसके ऊपर डाल दे तो वह साधक के प्रति मोहित होकर वशीभूत हो जाय।

सर्व मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—(५) "ॐ साखाहूली वन में फूली बैठी करै सिंगार, राजा मोहे प्रजा मोहे [illegible] ऐसी शक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

शनिवार के दिन वन में जाकर चावल, शक्कर चढ़ाकर तथा धूप देकर शंखाहुली को न्योत आवे। फिर रविवार को प्रातः काल पुनः उसके पास जाकर सर्वप्रथम उसे जल से स्नान कराये, फिर चावल तथा फूल चढ़ा, धूप दे, घी का दीपक जलाकर, गुड़ का भोग उसके आगे रक्खें। तत्पश्चात् १२१ बार मन्त्र पढ़ कर, उसे फूल समेत उखाड़ कर घर ले आवे।

फिर गोरोचन, साँप की केंचुल तथा संखाहूली—इन तीनों को पीस कर २१ दिन तक रात्रि के समय नित्य १२१ की संख्या में मन्त्र का जप करे तो वह सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय अभिमन्त्रित शंखाहूली को अपनी पगड़ी में रखकर राजसभा में जाये तो वहाँ पहुंचते ही राजा तथा सारी सभा मोहित होकर वश में हो जाय।

सर्व मोहिनी मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ साखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवरजा भूली जो याकों सिर पर धरे राजा प्रजा वाके चरणों पड़े मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

मन्त्र—(३) "ॐ नमो आदेस गुरू को ॐ साखाहूली वन में फूली ईश्वर देख गवरजा भूली आव आव राजा प्रजा पाव पड़ाव मंगल मोहन वसकरन मोहन मेरो नाम दे मोहन फलाना के अन्त शव सों मंग महेसुर गाँव चल मोहनी राऊल चल जलती आग बुझावत चली तीन खेत आगे मोह तीन खेत पाछै मोह तीन खेत उत्तर मोह तीन खेत दक्षिण मोह आवते की दृष्टि मोह दर मोह दीवान मोह गाँव का मुकद्दम मोह काजी का कुरान मोह हे तू नरसिंह वीर हमारा काज न करे तो अपनी माँ का दूध पीया हराम करे ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

शनिवार के दिन वन में जाकर शंखाहूली को न्योत आवे, फिर

रविवार को प्रातः काल वहाँ पुनः जाकर उसका मन्त्र संख्या १ में वर्णित विधि के अनुसार पूजन करे तथा २१ बार मन्त्र पढ़कर उसे उखाड़ कर घर ले आये। रात्रि के समय दीपक जलाकर नृसिंह का आवाहन करे तथा २ पेड़ा एवं पान के बीड़े का भोग रख कर, चावल, घृत शक्कर पर १२१ बार मन्त्र पढ़कर उन्हें अग्नि में होम करे तथा कपूर से आरती करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रविवार के दिन व्रत रक्खे। फिर शंखाहूली का पीस कर उसकी गोली बना ले तथा गोली को अपनी पगड़ी में रखकर राजदरबार में जाय तो राजा, प्रजा और सारी सभा अत्यन्त प्रसन्न हो। सम्पूर्ण सभा उसे पिता के समान आदर दे।

यदि उक्त अभिमन्त्रित शंखाहूली की गोली को मिठाई में रख कर, किसी स्त्री को खिला दे तो वह मोहित तथा वशीभूत हो।

यदि अभिमन्त्रित शंखाहूली की गोली को पानी में घिस कर, किसी स्त्री-पुरुष के माथे पर उसकी बिन्दी लगा दें तो वह भी मोहित हो जाता है तथा मनोभिलाषा की पूर्ति करता है।

फूल मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेस गुरू को एक फूल फूल भर दोना, चौंसठ जोगनी ने मिल किया टौना, फूल फूल वह फूल न जानी, हनुवन्त वीर घेर घेर दे आनी, जो सूंघे इस फूल की बास, उसका जी प्राण रहे हमारे पास, मूती हो तो जगाइ लाव, बैठी हो तो उठाइ लाव, औरे देखे जरे, बरे, मोहे देख मेरे पायन परे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरोवाचा वाचावाची से टरे कुम्भी नरक में परे।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके २१ दिन तक विधि पूर्वक दीपक का पूजन कर नित्य १४४ की संख्या में मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो।

साधन-विधि—

सोमवार के दिन इस मन्त्र को किसी फूल पर २१ बार फूँक कर, उसे जिसे भी सुँघावे, वह मन-प्राण से मोहित तथा वशीभूत हो।

फूल मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र–"कामरूदेस कामाख्या देवी, जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने बोई बारी, फूल उतारे लोना चमारी, एक फूल हँसे, दूजा फूल बिगसे, तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहरसिंह बसे, जो सूँघे इस फूल की बास, सो आवे हमारे पास, और के पास जाय, हियो काट मर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

रविवार को स्नान करके लौंग, सुपारी, पान, फूल, मिठाई ले, दीपक जला, धूप-गन्ध करके एक पुष्प को घृत में सान कर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अग्नि में होम दे। इसी प्रकार १०६ फूलों की आहुतियाँ दे। ब्रह्मचर्य से रहे। २१ दिन तक इसी प्रक्रिया को दुहराता रहे तो मन्त्र सिद्ध हो। बाईसवें दिन ब्राह्मणों को भोजन कराके दक्षिणा दे, तदुपरान्त सुगंधित पुष्प को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसे सुँघाया जायेगा। वह मोहित होकर पास चला आयेगा।

लाल कनेर फूल का मोहिनी मन्त्र

मन्त्र–"ॐ मूठो माता गूठी रानी गूठी लगावे आग, अमुका के चटक लगाव, बेधड़क कलह मचावें, मुख न बोले, सुख न सोवे, कहत मंत्र उठाय मार्‌यो उरझ, ज्यों काचा सूत की आटी उरझ, अब देखूँ नाहरसिंह वीर तेरे मन्त्र की शक्ति, शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

pustakmahal.com/wp-content/uploads/2020/11/

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुका' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करें।

साधन-विधि—

शनिवार के दिन लाल कनेर की डाली के लाल रंग का डोरा बाँध कर, उसे न्यौत आवे। रविवार को प्रातः काल उसी डाली को तोड़ लावे तथा रात्रि के समय विधि पूर्वक दीपक के आगे रख कर १२१ बार मन्त्र का जप करें। २१ दिन तक नित्य इतनी ही सख्या में जप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

सिद्ध मन्त्र द्वारा लाल कनेर के फूल को २१ बार अभिमन्त्रित करके जिसे दिया जायेगा, वह अवश्य ही मोहित होकर, साधक के पास चला आयेगा।

चम्पा फूल का मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"कामरू देस कामाख्या देवी, जहाँ बसे इसमाइल जोगी इसमाइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुने लोना चमारी, फूल राता फूल माता, फूल हांसा फूल बिगसा, तहाँ बसे चम्पा का पेड़, चम्पा के पेड़ में रहे काल भैरू, भूत प्रेत मरे मसान पै आवें, किसके काम ये आवें, टोना टामन के काम, भेजूँ काल भैरूं को लावे मुशकें बाँध, बैठी हो तो वेगी लाव, सोती हो तो उठा लाव, वह सोवे राजा के महलों प्रजा के महलों मुझ से होनी रोणी फूल दू उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमको छाँड़ि पर घर जाय, छाती फार वहीं मर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा, वाचा चूके उमा हसूके, लोना चमारी बहरे जोगी के कूंड में पड़े वाचा छोड़ कुवाचा जाय, तो नरक में पड़े जाय।"

https://hindi.pustakbharat.com/

साधन-विधि—

शनिवार के दिन चम्पा के पेड़ को न्यौत आवे और उसकी डाली में लाल कलावे का डोरा बाँध आवे। रविवार को प्रातः काल उसी डाली को ७ बार मन्त्र पढ़कर तथा गूगल की धूनी एवं धूप देकर तोड़कर घर ले आवे। रात्रि के समय दीपक जला कर उसके सामने फूल की डाली को रक्खे तथा भैरों का पूजन कर २१ बार में २१ मन्त्र जपे। इक्कीस दिन तक नित्य इतनी ही संख्या में जप करते रहने पर मन्त्र सिद्ध हो। भोग में शराब तथा उड़द के बड़े, तैल, गुड़ तथा दही रक्खें।

प्रयोग-विधि—

चम्पा के फूल को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिसे सुंघाया जायेगा, भैरों उसे लाकर साधक के सम्मुख हाजिर कर देंगे।

सुपारी मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"खरी सुपारी टामनगारी, राजा प्रजा खरी पियारी, मन्त्र पढ़ लगाऊँ तो रही या कलेजा लावे तोड़, जीवत चाटे पगथली मूवे सेवे मसान, या शब्द की मारी न लावे तो जती हनुमन्त की आज्ञा न माने, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

७ सुपारी लेकर उन पर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर २१ दिन में सिद्ध करले। अथवा सूर्य ग्रहण के दिन केवल १०८ बार मन्त्र पढ़ कर सुपारी को सिद्ध करले। यह सुपारी जिसे खिलाई जायेगी, वही मोहित होकर वश में हो जायेगा।

सुपारी मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ देव नमो हरय ठं ठं स्वाहा।"

साधन-विधि—

पूर्व मन्त्र के अनुसार।

प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित सुपारी जिसे खिलावे वह मोहित हो।

सुपारी मोहिनी मन्त्र (३)

मन्त्र—"पीर मे नाथ पीर तू नाथ जिसे खिलाऊँ तिसे बस करना, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

सूर्य-ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त नदी के जल में खड़े होकर ७ सुपारियों को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके निगल जांय। जब शौच के समय वे पेट के बाहर निकले, तब उन्हें पहले जल से, फिर गाय के दूध से धोकर ७ बार मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित करें तथा गूगल की धूनी देकर रखलें।

प्रयोग-विधि—

उक्त सुपारी को मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दिया जायेगा, वह स्त्री-पुरुष कोई भी क्यों न हो, मोहित होकर, वशीभूत हो जायेगा।

लौंग मोहिनी मन्त्र

मन्त्र—"ॐ सत्त नाम आदेस गुरु को लौंगा लौंगा मेरा भाई इन ही लौंगा नें शक्ति चलाई, पहली लौंग राती माती, दूजी लौंग जीवन माती, तीजी लौंग [illegible] कर जोड़, चारों लौंग जो मेरी खाय, फलाना के पास सों फलाना कने आ जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके, रात्रि के समय दीपक का पूजन कर २१ बार मन्त्र को प[illegible]। २२ दिन तक नित्य इसी संख्या में जप करने से मन्त्र

https://t.me/tantrikbooks

सिद्ध हो जाता है। फिर ४ लौंग को ७ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर, जिसे खिला देंगे, वह मोहित होकर हाजिर होगा।

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ "फलाना के पास सों फलाना कने" शब्द आया है, वहाँ स्त्री जिस पुरुष के पास रहती हो पहले उसके नाम का और बाद में अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

तैल मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ मोहना राणी मोहना राणी चली सैर को, सिर पर धरे तेल की दोहनी, जल मोहूं थल मोहूं मोहूं सब संसार, मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी मोह रहा दरबार, मेरी भक्ति गुरू की, भक्ति दुहाई गौरा पारवती की, दुहाई बजरंगवली की।"

साधन-विधि—

इत्र, मिठाई, दीपक तथा लोबान लेकर, दीपावली की रात्रि में २२ माला जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

उक्त सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित-तैल की बिन्दी अपने मस्तक पर लगा कर राज दरबार में जाने से वहाँ उपस्थित सब लोग मोहित हो जाते हैं। यदि ७ बार अभिमन्त्रित तैल को साध्य-स्त्री के अंग से लगा दिया जाय तो वह मोहित होकर, साधक के वश में हो जाती है।

तैल मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी मोह रहा दरबार, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति दुहाई लोना चमारी की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई बजरंगबली की।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या १ के अनुसार।

मिठाई मोहिनी मन्त्र

मन्त्र–"जल मोहूं थल मोहूं, जंगल की हिरणी मोहूं, बाट चलत बटोही मोहूँ, कचेहरी बैठा राजा मोहूं, पीढ़ी बैठी रानी मोहूं, मोहनी मेंरा नाम, मोहूं जग संसार, तरा तरीला तोतला तीनों बसें कपाल, दस्तक दे दी मात के दुश्मन करूँ पामाल, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरोवाचा।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके ११ दिन तक नित्य १४४ बार मन्त्र का जप करे तथा मन्त्र पढ़-पढ़ कर अग्नि में गूगल का होम करे। दीपक पर बतासे तथा फल चढ़ाये तो मन्त्र सिद्ध हो।

प्रयोग-विधि—

मिठाई को २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसे खिलाये, वह मोहित होकर वशीभूत हो।

गुड़ मोहिनी मन्त्र (१)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेश गुरु को गूगल की धूप को धूवां धार, देखूँ पलमा तेरो शक्ति, तेरस रात्रि को टूटा तारा, ऐसा टूटे भैरों बाबा का मन गाये, गुड़ मन्त्र पढ़ उसको दे, घर में चक्क न बाहर चक्क, फिर फिर देखे मेरा मुख, जीव न सेवे जीव को मूवे सेवा आवे, [illegible] हो तो जती हनुमन्त की आन, हमें छांड़ और के पास जाय, पेड़ू फाट तुरत मर जाय, सत्यनाम आदेस गुरु को।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ करके ७ शनिवार में प्रतिदिन १२५ बार मन्त्र का जप करे तथा भोग में शराब, लपसी, कलेजी धरे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

उक्त सिद्ध मन्त्र से गुड़ को ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसे खिलादे, वह मोहित होकर सेवा में हाजिर हो जाता है।

गुड़ मोहिनी मन्त्र (२)

मन्त्र–"ॐ नमो आदेस गुरू को या गुड़ राती, या गुड़ माती या गुड़ आवै पायां पड़ती, जो माँगू श्योजन पाऊँ, सूती तिरिया जगायर ल्याऊँ, चलिरे आगिया बेताल, फलानी के पेट चलावे झाल, रात्रि को चैन न दिन कों सुख, फिर फिर जोवे हमारा मुख, जै मकड़ी मकड़ी सैट ले, सींस फाट दो टूक हो पड़ै, काला कलुआ काली रात, कलुआ चाला आधी रात, चाल चाल रे काला कलुआ, सोधन चाटे, हमारा तलुआ, आक के पान बसे कवारी, धन जोवन सों खरी पियारी, रेतरगत गुड़ करे गिरास, अमुकी आवे फलाना पास, हनुवत जती की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

२ टंक (तोला) गुड़ लेकर उसमें अपनी अनामिका अँगुली का रक्त मिला दे। फिर उस पर २१ बार मन्त्र पढ़ कर, साध्य-स्त्री को खिला दे तो वह मोहित होकर वशीभूत हो जायेगी। यदि स्त्री को खिला न सके तो गुड़ को कुएँ में डाल दे तो उसका पानी पीने पर वह वश में होगी।

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ "अमुकी आवे फलाना पास" वाक्य है, वहाँ साध्य-स्त्री तथा पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मोहिनी पुतली वशीकरण मन्त्र

मन्त्र–"बाँधूँ इन्दु बांधूँ तारा, बाँधूँ बिन्दु लोही की धारा, उठे इन्दन घाले घाव, सूक साक पूणी हों जाइ, वण ऊपर लोंका कड़ो हीया लपर लो सूत, मैं तो बन्धन बंधियों सासू ससुर जाया पूत, मन बाँधूँ तन बाँधूं बाँधूं विद्या देसूँ साथ चार कूंट जों फिर आवे तो फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ "फलानी फलाना के साथ" लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री तथा साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ कर, २१ दिन तक रात्रि के समय स्वच्छ स्थान में पवित्र होकर एक पुतली बनाकर उसका विधि पूर्वक पूजन करे तथा गूगल की धूनी देकर २१ बार मन्त्र का जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जप की अवधि में प्रत्येक शनिवार को सवा पाव लपसी का भोग रखना चाहिए तथा अन्य दिनों में ५ बताशों का भोग लगाना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

issuu.com/abdul23/niali/odisha

शनिवार के दिन एक पुतली बनाकर उसके पेट में स्त्री का नाम लिखे। फिर पुतली के ऊपर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर फूंके। पुतली के चारों ओर जिन वर्णों को लिखा जायेगा, उनका स्वरूप आगे दिये गये चित्र में प्रदर्शित है। इसी के अनुसार पुतली का चित्र बनाना चाहिए। पुतली के तैयार हो जाने पर, उसे स्त्री को दिखाकर अपनी छाती से लगा ले तो साध्य-स्त्री बेचैन तथा मोहित होकर साधक के कदमों में आकर हाजिर हो जायेगी।



(मोहिनी पुतली वशीकरण)

३ वशीकरण-प्रयोग

वशीकरण के विषय में

'वशीकरण' का अर्थ है—किसी व्यक्ति अथवा प्राणी को अपने वश में करना। स्व-वशीभूत किये गये प्राणी से इच्छित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है। इस प्रकरण में विविध प्रकार के वशीकरण मन्त्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग अधिकतर किसी स्त्री अथवा पुरुष को वश में करने के लिए किया जाता है। इनके अतिरिक्त कभी-कभी वेश्या, शत्रु, राजा, राज-कर्मचारी आदि को वशीभूत करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

न्यायालय में चल रहे किसी विवाद के समय जब यह अनुभव हो कि राजा अथवा न्यायाधीश विरोध पक्ष से सहमत होकर दण्ड देने पर उतारू है—उस समय राजा अथवा राज-कर्मचारी विषयक वशीकरण-साधनों का प्रयोग स्व-पक्ष के लिए हितकर सिद्ध होता है। इसी प्रकार जब यह अनुभव हो कि कोई शत्रु, स्त्री, पुरुष अथवा वेश्या अपने से प्रतिकूल होकर हानि पहुंचा सकते हैं। तो भी वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करना उचित रहता है।

पति के विमुख होने पर पति-वशीकरण एवं स्त्री के विमुख होने पर स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी प्रयोगों का साधन करना चाहिए। किसी कुमारी कन्या अथवा पर-स्त्री को वशीभूत [illegible] प्रयोग तब तक वर्जित माना गया है, जब तक कि वैसा करना अपने व्यापक-हित के लिए नितान्त ही आवश्यक अनुभव न हो।

वशीकरण प्रयोग (१)

इस प्रयोग की सिद्धि आगे लिखे अनुसार की जाती है। सर्व प्रथम अग्रलिखित विनियोग वाक्य का उच्चारण करें—

विनियोग—"ॐ अस्य श्री वामदेवमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री कामदेव देवता अमुकवश्यार्थे जपे विनियोगः।"

टिप्पणी—

इस विनियोग-वाक्य में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिये। जैसे—रामलाल नामक किसी पुरुष को वश में करना है तो 'रामलाल वश्यार्थे अथवा मालतीदेवी नामक किसी स्त्री को वश में करना है तो 'मालती देवी वश्यार्थे' आदि उच्चारण करना चाहिए।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'अङ्गन्यास' करें।

"कां हृदयाय नमः।
कीं शिरसे स्वाहा।
कूं शिखायै वौषट्
कामदेवो देवता अस्त्राय कट्।"

फिर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव देवता का ध्यान करें।

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं,
मीनध्वजं चारुकृताङ्गरागम्।
कराम्बुजैरंकुशमिक्षु चापं
पुष्पास्त्रपाशौ दधतं नमामिः।"

ध्यानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का ५००० की संख्या में जप करें—

"ॐ कामदेवाय सर्वजन प्रियाय सर्व जन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

प्रयोग-विधि—

मन्त्र-जप पूर्ण हो जाने पर कनेर के लाल पुष्पों पर चमेली का इत्र लगाकर दशांश अर्थात् ५०० की संख्या में होम करें।

फिर बटुक के निमित्त किसी कुमार (बालक) को भोजन करायें तथा उक्त मन्त्र द्वारा चन्दन को १०८ बार अभिमन्त्रित करके, उसका तिलक कुमार के मस्तक (ललाट) पर लगायें। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका ध्यान करते हुए बटुक (बालक) से संभाषण (वार्तालाप) करें तो वह अवश्य वशीभूत हो जाएगा।

वशीकरण प्रयोग (२)

मन्त्र—"ॐ मोंड्रो।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र का बिना भोजन किये ही ५०० बार जप करें। जिस व्यक्ति को वशीभूत करने की इच्छा से इस मन्त्र का जप किया जाता है, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा।'

साधन एवं प्रयोग विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जल, पुष्प, वस्त्र अथवा किसी उत्तम फल को इस सिद्ध मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति के हाथ में दे दिया जाता है, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (४)

मन्त्र—"चामुण्डे जृंभ मोहये वशमानय स्वाहा।"

यह वशीकरण हेतु चामुण्डा का मन्त्र है। मन्त्र का जप करने से पूर्व निम्नानुसार चामुण्डा देवी का ध्यान करना चाहिए।

ध्यान मन्त्र—"दष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना
सान्द्रान्धकारे स्थिता।
खट्वांगासित मूढदेच्छित करा
वामेशया संशिरः॥

https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

श्यामा पिङ्गल मूर्धजा भयकरा
शार्दूल चर्माम्बरा।
चामुण्डाशववाहिनी जप विधौ
ध्येयो सदा साधकैः॥"

साधन-विधि—

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का १००००० की संख्या में जप करें, फिर जप का दशांश अर्थात् १०००० की संख्या में पलाश के पुष्पों से होम करें। होम करते समय एक-एक पुष्प को सात-सात बार अभिमन्त्रित करते हुए होम करना चाहिये।

प्रयोग विधि—

होम करते समय जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका ध्यान करने से सिद्धि प्राप्त होती है अर्थात् वह व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (५)

वशीकरण हेतु कामेश्वर मन्त्र की प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

मन्त्र—"कामदेवामुकीमानय मम पदं वशं च।"

यह कामेश्वर मन्त्र है। इसका जप करने से पूर्व सर्व प्रथम निम्नानुसार ध्यान करना चाहिए—

ध्यान—"आकर्णाञ्चितकार्मुकं हर पदे
धुन्वन् हरं सायकैं—
र्भानोमेण्डलमध्यगो दयितया
सानन्दभालिङ्गितः।
प्रत्यालीढपदो जपानिभतनु-
र्भग्नः परेतासनः,
कन्दर्पो जयकर्मणि प्रतिदिनं
ध्येयो नरैरीट्टशः॥"

साधन-विधि—

ध्यानोपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का पहले शुद्ध भाव से ५००० की संख्या में जप करें, तदुपरान्त ५०० की संख्या में पलाश के पुष्प तथा कदम्बक के फलों से दशांश होम करें। पान, फूल अथवा अन्य सुगन्धित वस्तुओं का भी होम करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

उक्त प्रयोग को सात बार करने से साध्य-स्त्री वशीभूत होती है।

टिप्पणी—

मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। जैसे—साध्य-स्त्री का नाम 'मालती' हो तो

"कामदेवा मालती मानय मम पद वशं च"

इस प्रकार मन्त्रोच्चारण करना चाहिए।

विशेष—

उक्त प्रयोग में शिव मन्दिर, चौराहे के मध्य भाग, नदी के तट अथवा श्मसान भूमि—इनमें से किसी एक स्थान में बैठकर मन्त्र-जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। यह प्रयोग वशीकरण के अतिरिक्त आकर्षण एवं मोहन का कार्य भी करता है। कहा गया है कि यदि इस मन्त्र को भली प्रकार सिद्ध कर लिया जाय तो वाक्-सिद्धि तक हो जाती है।

भूत-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ श्री वं वं भूं भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

मूल नक्षत्र से आरम्भ करके शनिवार को [illegible] की जड़ में डालकर, उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें। इस क्रिया को ४० दिनों तक निरन्तर करते रहें तो इकतालीसवें दिन भूत सामने प्रकट होकर पानी की माँग करेगा। उस समय उसमें तीन वचन लेकर यह कहें कि याद किये जाने पर वह तुरन्त काम करने के लिए हाजिर हो जाया करेगा। जब वह वचन दे दे, तब उसे पानी दे दें। तत्पश्चात् जब तक उसे पूर्वोक्त विधि से पानी मिलता रहेगा, तब तक वह साधक की सेवा में बना रहेगा। भूत के

rushilokmanch.com/books/

सामने आने पर उससे डरना नहीं चाहिए तथा निर्भय होकर बातचीत करनी चाहिए। परन्तु जिस दिन पानी देना बन्द कर दिया जायेगा, उसी दिन से भूत आना तथा सेवा करना बन्द कर देगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ क्ष्रां क्ष्रूँ क्ष्रः ।१२। सौं ह ह सः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।"

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र के प्रारम्भिक भाग—"ॐ क्ष्रां क्ष्रूं क्ष्रः को बारह बार दुहराना चाहिए, तदुपरान्त शेष भाग का केवल एक बार उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

(१) आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भोजन राजा को खिला देने से अथवा उसे स्वयं खाकर राजा के पास जाने से राजा वशीभूत होता है।

(२) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भोजन जिस साध्य-मनुष्य का नाम लेकर खाया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

(३) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित पुष्पों की माला को अपने सिर पर धारण करके साध्य-स्त्री के पास पहुंचने से वह वशीभूत होती है।

(४) उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जायफल को खाने से कामोद्दीपन होता है। उस स्थिति में साध्य-स्त्री के साथ सहवास करने से वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ चिटि चिटि चामुण्डा काली काली महाकाली अमुकं मे वशमानय स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जिस स्त्री-पुरुष को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र किसी ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को ताड़पत्र के ऊपर, साध्य-व्यक्ति के नाम सहित लिखें। फिर कनेर का दूध तथा जल बराबर मात्रा में लेकर उसमें उक्त ताड़पत्र को डाल दें तथा रात्रि के समय उस ताड़पत्र एवं कनेर के दूध तथा जल वाले पात्र को अग्नि पर चढ़ादें तथा स्वयं उसके सामने बैठकर १००० बार उक्त मन्त्र का जप करें। इस क्रिया को निरन्तर सात दिन तक करते रहने से साध्य-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है। यह प्रयोग स्त्री-पुरुष दोनों को वशीभूत करने वाला है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु-कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि एवं प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जिस व्यक्ति के ऊपर प्रयोग करना हो, उसके सम्मुख पहुंच कर १०८ बार मन्त्र को मन-ही-मन पढ़ कर उस व्यक्ति की ओर पर फूँक मारने से वह वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय। 'अमुकं' मम वश्य कुरु-कुरु स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति (जिस व्यक्ति को वश में करना हो) के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

जैसे—'मालती' नामक किसी स्त्री को वश में करना हो तो

"मालती मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"

अथवा 'रामप्रसाद' नामक किसी पुरुष को वश में करना हो तो—

"रामप्रसादं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"

इस प्रकार उच्चारण करना चाहिए।

साधन विधि—

उक्त मन्त्र को 'सिद्धि' योग में १०८ बार जप कर सिद्ध करलें। 'सिद्धि' योग किस दिन और तिथि को पड़ेगी, इसका ज्ञान पञ्चाङ्ग (पत्रा) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रयोग विधि—

सिद्धि योग में मन्त्र को सिद्ध कर लेने के बाद उक्त मन्त्र से एक सुपारी को अभिमन्त्रित करें अर्थात् १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर सुपारी पर फूँक मारें, तत्पश्चात् वह सुपारी साध्य-व्यक्ति को खाने के लिए दें। उस अभिमन्त्रित सुपारी को खा लेने पर साध्य-व्यक्ति (चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष) साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ चामुण्डे जय जय वश्यकरि जय जय सर्व सत्वान्नमः स्वाहा।"

साधन-विधि—

इस मन्त्र को 'सिद्धि योग' में अथवा ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें।

प्रयोग विधि—

मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद किसी रविवार अथवा मंगलवार के दिन इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमंत्रित किया हुआ कोई पुष्प साध्य-व्यक्ति को सूँघने के लिए दें तो वह व्यक्ति पुष्प को सूँघते ही साधक के वशीभूत हो जाएगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती सूचि चण्डालिनि नमः स्वाहाः।

साधन एवं प्रयोग विधि—

इस मन्त्र का पाठ करते हुए मोम द्वारा अभिलषित-व्यक्ति की एक मूर्ति का निर्माण करें। उस मूर्ति को कृतांजलि, युक्त पाद तथा अंग-प्रत्यंग सहित बनाकर, उसमें अभिलषित-व्यक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करें। प्राण प्रतिष्ठा की विधि किसी विद्वान् पण्डित से सीख लें अथवा उसी के द्वारा करायें। फिर उस पुतली के ऊपर उक्त मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करके पुतली को अंगारे की अग्नि में तपायें तो अभिलषित-व्यक्ति वशीभूत होता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—"पिंगलायै नमः"

साधन विधि—

सिद्धि योग अथवा ग्रहण पर्व में अथवा किसी अन्य शुभ-मुहूर्त में २००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

दोनों पंखों सहित भ्रमर (भौंरा या मधुप) तथा मुर्गे [illegible] को एकत्र कर, उसमें अपनी अनामिका अँगुली का रक्त तथा कान का मैल मिलादें। इस मिश्रण को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति को खिला दिया जाता है, वह वशीभूत हो जाता है।

टिप्पणी—

स्मरणीय है कि यह मिश्रण विषैला होगा, अतः इसका प्रयोग अत्यन्त स्वल्प मात्रा में ही करना उचित है।

pustakbharti.com/admin/product/woo

सर्व वशीकरण मन्त्र (८)

मन्त्र—"ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को १०८ बार जप कर अभिलषित व्यक्ति के सम्मुख पहुंचने से वह वशीभूत होता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा।"

साधन-विधि—

उक्त मन्त्र ग्रहण काल में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) देवदाली का रस निकाल कर, उसे सुखाकर चूर्ण करें, फिर किसी कन्या अथवा युवती स्त्री द्वारा उस चूर्ण की छोटी-छोटी गोलियाँ तैयार करायें। इनमें से एक गोली उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री, पुरुष अथवा राजा को खिला दी जाती है, वह वशीभूत हो जाता है।

(२) उक्त वटी का स्वयं सेवन करने से चोर, शत्रु तथा हर प्रकार की व्याधियों का भय नष्ट होता है एवं शुभत्व की प्राप्ति होती है।

(३) पुष्यार्क में सफेद गुन्ध (धुँधची) की जड़ लाकर उसे पाँच मलों से युक्त कर तांबूल में रख लें, फिर उसे मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर साध्य-मनुष्य को खिला दें तो वह स्त्री-पुरुष कोई भी क्यों न हो, वशीभूत हो जायेगा।

(४) उक्त मन्त्र द्वारा अपने वीर्य को अभिमन्त्रित कर, उसे पान में रख कर जिसे खिला दिया जायेगा, वह अवश्य वशीभूत हो जायेगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—"ॐ ऐं ह्रीं 'श्री' क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय साधय।"

साधन विधि—

किसी ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) प्रातः काल इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण करते हुए, जिस व्यक्ति का नाम लेकर अपने मुख को पानी से धोया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

(२) इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित जल जिस व्यक्ति को पिला दिया जायगा, वह वश में हो जायेगा।

सर्व वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—"ॐ क्लं क्लौं ह्रीं नमः।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को ग्रहण के समय १००० की संख्या में जप किया जाय तो पाताल वासी वशीभूत होते हैं। यदि १०००० की संख्या में जप किया जाय तो देवता वश में होते हैं। यदि १००००० की संख्या में जप किया जाय तो तीनों लोकों के प्राणी वशीभूत होते हैं।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१२)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति पुर पुर वेशनि पुराधिपतये सर्वजगद्-भयंकरि छीं भैं ऊं रां रं [illegible] वाण सर्व श्री समस्त नरनारीगणं मम वश्यं नय नय स्वाहा।"

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

https://t.me/tantrikbooks

प्रयोग विधि—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र को १५ बार पढ़कर अपने मुँह के ऊपर हाथ फेरें, फिर जिधर को देखेंगे, उस ओर के सब लोग वशीभूत हो जायेंगे।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१३)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति चामुण्डे महाहृदय कंपिनि स्वाहाः।"

साधन-विधि—

किसी शुभ मुहूर्त में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमंत्रित पान का बीड़ा जिस स्त्री-पुरुष को खिला दिया जाय, वह वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण मन्त्र (१४)

मन्त्र—"ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुख रंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिह्वे सर्वलोक वश्यंकरि स्वाहा।"

साधन विधि—

'सिद्धि' योग अथवा ग्रहण-पर्व में १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

(१) चन्द्र ग्रहण के समय सफेद विष्णुक्रान्ता की जड़ को उक्त सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमंत्रित करें। फिर उसके अंजन को अपने नेत्रों में लगाकर जिस साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचेंगे, वह (स्त्री हो अथवा पुरुष) वशीभूत हो जाएगा।

(२) ताम्बूल (बिना लगा सादा पान) में गोरोचन मिला कर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर पीस लें। फिर उस मिश्रण का

अपने माथे पर तिलक लगाकर साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचें तो वह वशीभूत हो जाता है।

(३) उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित गोरोचन को लगे हुए पान अथवा भोजन में मिलाकर, उसे साध्य-व्यक्ति को भक्षण करा दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगा।

(४) मैनसिल, गोरोचन और ताम्बूल (सादा पान) इन तीनों को पीसकर उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करें, फिर उक्त मिश्रण का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर, साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचकर उससे बातचीत करें तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

(५) शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को सफेद घुंघची की बेल को जड़ सहित उखाड़ लावें, फिर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमंत्रित कर; पीस लें तथा पान में रखकर साध्य-व्यक्ति को खिलादें तो वह वशीभूत हो जाता है—

टिप्पणी

संख्या १ से लेकर ५ तक जिन वशीकरण क्रियाओं का उल्लेख किया गया है, उन्हें बिना अभिमन्त्रित किए हुए भी प्रयोग में लाया जाता है परन्तु पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर, प्रयोग में लाने से प्रभाव शीघ्र प्रकट होता है।

पति वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।"

साधन विधि—

यह मन्त्र १०८ बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

(१) गोरोचन को मछली के पित्त में मिलाकर, उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, उसका मस्तक पर तिलक लगाने से पति वशीभूत हो जाता है।

अथवा

(२) उक्त विधि से तिलक लगाकर पति की ओर बाईं अंगुली से संकेत करने से वह वश में हो जाता है।

https://t.me/tantrikbooks

अथवा

(३) कौडिन्य पक्षी की बीठ, मांस, घृत तथा शरीर के मल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गुप्ताङ्ग में लेप करके सहवास करने से पति वशीभूत हो जाता है।

पति वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो महायक्षिणी पति से वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

(१) अपनी योनि का रक्त, केला का रस तथा गोरोचन-इन सबके मिश्रण से अपने मस्तक पर तिलक करके स्त्री पति के पास जाय तो वह वशीभूत हो।

अथवा

(२) मंगलवार के दिन एक साबुत सुपारी को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके निगल लें। जब वह शौच के समय बाहर निकलें तो उसे पानी, दूध तथा गंगाजल से धोकर पुनः मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करें। फिर उसे पान में रख कर पति को खिला दें तो वह वशीभूत हो।

अथवा

(३) लौंग और अपनी जिह्वा का मल-इन दोनों को मिला कर ७ बार अभिमन्त्रित कर, पति को खिला दें तो वह वशीभूत हो।

सर्व जन वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरू को राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, ब्राह्मण वाणियां, हनुमन्त रूप में जगत मोहूं, तो रामचन्द्र पर माणिया, गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन-विधि—

शुभ मुहूर्त में धूप, दीप, नेवैद्य रख कर पहले श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करें, फिर २१ दिनों तक नित्य १२१ की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

गाँव के चौराहे पर जाकर वहाँ से धूलि की चुटकी ले आयें। उसे ७ बार अभिमन्त्रित करके, अपने मस्तक पर बिन्दी लगायें तो जो भी व्यक्ति देखेगा, वही वशीभूत होगा।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"ॐ नमो कटविकट घोर रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री अर्थात् जिस स्त्री को वश में करना हो उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण के समय इस मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करें तो यह सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—

मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद किसी रविवार के दिन जब भोजन करने बैठें, तब सर्व प्रथम १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़ कर भोजन-सामग्री को अभिमन्त्रित कर लें अर्थात् १०८ बार मन्त्र पढ़-पढ़ कर भोजन सामग्री पर फूँक मारें। फिर जिस स्त्री को वश में करना हो, उसका नाम लेते हुए भोजन करें। भोजन करते समय उस स्त्री का नाम बारम्बार लेते रहना चाहिए। इस प्रक्रिया से साध्य-स्त्री साधक के शीघ्र वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"ॐ भगवति भग भाग दायिनी अमुकीं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

प्रयोग-विधि—

गुरुवार के दिन नमक को इस मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के खान-पान की वस्तु में मिला कर उसे खिला-पिला दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

स्त्री-वशोकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांण्डालिनि अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण के समय १०००० को संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

रविवार के दिन जिस स्त्री का नाम लेकर दूध तथा शर्करा से होम किया जाय, वह वशीभूत हो जाती है। होम के समय मन्त्र जप १०००० की संख्या में करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—"ॐ नमो उच्छिष्ट चाण्डालिनि पच पच भंज भंज मोहे मोहे भम अमुकीं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

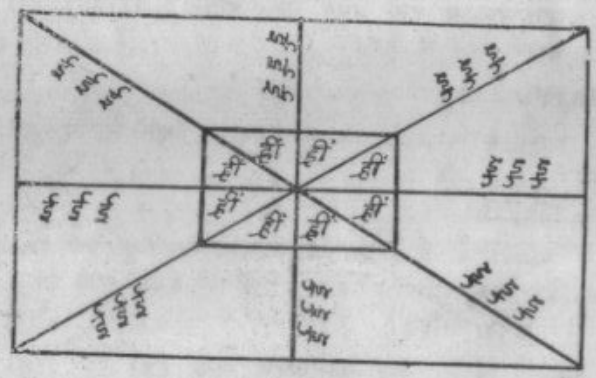
ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

भोजनोपरान्त पके हुए चावलों को एक हाथ में लेकर इस मन्त्रको पढ़ें, फिर उस भात को रख दें। इसी प्रकार १० दिनों तक नित्य करते रहें। तत्पश्चात् उस १० दिनों के एकत्र भात को लेकर उसे ७ बार मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित करें। फर वह भात साध्य-स्त्री को खाने के लिए दें अथवा उसके घर में फेंक दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

विशेष—

मन्त्र जप करते समय नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गन्ध द्वारा भोज पत्र के ऊपर लिख कर, उसकी विधिवत् पूजा-प्रतिष्ठा करें; फिर उसे आसन के नीचे दबा कर तथा उस आसन के ऊपर स्वयं बैठ कर उक्त मन्त्र का जप करना चाहिए।



८

(स्त्री-वशीकरण यन्त्र)

issuu.com/abdul23/nial/collections

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं सः।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

जिस स्त्री को सदैव के लिए वश में करना हो, उसके 'स्मर सदन' में अपने 'मदनांकुश' को डाल कर अर्थात् सहवास करने की स्थिति में रहते हुए इस मन्त्र का १०००० की संख्या में जप किया जाय, तो वह सदा-सदा के लिए वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—"ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे ह्रूं घोर घोरतरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे ह्रः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे विच्चे।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

साध्य-स्त्री को भोजन के लिए आमन्त्रित कर, उक्त सिद्ध मन्त्र द्वारा २१ बार अभिमन्त्रित भोजन-सामग्री को उसे खिला देने से वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—"ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

(१) आवश्यकता के समय उक्त सिद्ध मन्त्र को जिस साध्य-स्त्री की हथेली पर अलक्त (अलता) द्वारा लिख दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

(२) रवि, गुरु तथा भौमवार-इन तीन दिनों तक यह मन्त्र स्त्री की हथेली पर लिखते रहने से वह अवश्य वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (८)

मन्त्र—"ॐ कुम्भनी स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

इस सिद्ध मन्त्र द्वारा किसी सुगन्धित पुष्प को १०८ बार अभिमन्त्रित करें फिर वह पुष्प साध्य-स्त्री को सुँघा दें तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—"ॐ नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खड्गं हस्ते सिंहारूढे अमुकीं मे वशमागच्छमागच्छ कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन-विधि—

ग्रहण-पर्व से आरम्भ करके ७ या २१ दिन तक नित्य १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

टिप्पणी—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग-विधि—

सिद्ध मन्त्र को भोज पत्र के ऊपर लिखकर जिस साध्य-स्त्री का नाम लेकर धूप दी जाती है; वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—"ऐं सहवज्जरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं कामं ग्राहय ग्राहय स्वप्ने मम रूपेण नखैविदारय विदारय द्रावय द्रावय रद महेन बन्धय श्रीं फट्।"

https://www.facebook.com/groups/tantrikbooks123/

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

उक्त मंत्र को काम-विह्वल चित्त से १५ दिनों तक रात्रि के समय निरन्तर जपते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—"ऐ सहवल्लरि क्लीं कर क्लीं काम पिशाचि अमुकीं काम ग्राहय पद्मे मम रूपेण नखैविदारय विदारय द्रावय द्रावय बन्धय बन्धय श्रीं फट्।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

पूर्व मन्त्र के समान है।

विशेष—

यदि उक्त दोनों मन्त्रों को काम-विह्वल-चित्त से १५ दिनों तक रात्रि के समय लगातार जपा जाय तो शिवजी की कृपा से साध्य-स्त्री अवश्य वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१२)

मन्त्र—"ॐ ठः ठः ठः ठः अमुकी मे वश मानय स्वाहा ह्रीं क्ली श्री श्रीं क्लीं स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन-विधि—

यह मन्त्र रविवार के दिन १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

रविवार के दिन जौ का आटा सवा पाव महीन पीस कर उसे गूंथ कर एक लोई बनायें तथा उसे बेलकर मन्द-मन्द आग पर पकायें। रोटी को केवल एक ही ओर सेकें, दूसरी ओर न सेकें। वह एक ओर से ही ऐसी सिक जानी चाहिए कि दूसरी ओर भी सिकी हुई सी अनुभव हो। तत्पश्चात् जिस ओर रोटी सिकी न हो, उस ओर सिन्दूर को पानी में घोलकर, अपनी तर्जनी अंगुली द्वारा उसके ऊपर उक्त मन्त्र को लिखें। फिर गंध, पुष्प, सुपारी, पान, दीपक, गोरे बटुकनाथ तथा दक्षिणा सहित उस मन्त्र लिखित रोटी का पूजन करें। फिर उसके ऊपर मिष्ठान्न, दही तथा चीनी-इन वस्तुओं को इतना और इस प्रकार से रखें कि उनसे रोटी ढंक जाय। तत्पश्चात् जिसे वश में करना हो, उसका नाम लेते हुए १०८ बार मन्त्र का जप करें। फिर मन्त्र पढ़-पढ़ कर उस रोटी के टुकड़े कर-कर के किसी काले कुत्ते को खिलादें। इस प्रयोग से साध्य-स्त्री अवश्य वशीभूत हो जाती है।

इस मन्त्र के जप तथा प्रयोग काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (१३)

मन्त्र—"ऐं भग भुग भगनि भगोदरि भगमाले योनि भगनिपातिनि सर्व भग संकरी भगरूपे नित्य क्लें भगस्वरूपे सर्व भगानि मम वश मानय वरदे रेते भग क्लिन्ने क्लान द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविधे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वान् भगेश्वरि ऐं क्ल ज व्लू भै व्लु मा मलू हे हे विलन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

साधन-विधि—

यह मन्त्र ग्रहण-पर्व में १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

आवश्यकता के समय जिस स्त्री को वश में करना हो, उसकी ओर देखते हुए इस मन्त्र का जप करने, से वह शीघ्र वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (१४)

मन्त्र—"ॐ नमः क्षिप्रकामिनी अमुकीं मे वश मानय स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

ग्रहण पर्व में १०००० की संख्या में जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

प्रातःकाल दन्तधावन करके पानी की भरी लुटिया हाथ में लेकर उसे उक्त मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमंत्रित करें फिर उसमें भरे पानी को स्वयं पी जाँय। इस क्रिया को निरन्तर ७ दिन तक नित्य करते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत हो जाती है।

स्त्री वशीकरण मंत्र (१५)

मन्त्र—"या आमीन या फामीन हमारे दिल से फलानी का दिल मिलादे।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहां 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन-विधि—

जुमेरात (बृहस्पति वार) के दिन यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

https://archive.org/details/@zohaibhasanattari

प्रयोग-विधि—

जिसको वश में करना हो, उसे अपने सामने अग्नि के समीप बैठाये, फिर गुग्गुल, लोबान तथा धूप हाथ में लेकर उसकी (साध्य-स्त्री की) दृष्टि इन वस्तुओं पर डलवायें। जब उसकी दृष्टि लोबान, धूप आदि पर पड़ जाय, तब पूर्वोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे अग्नि में डाल दें। इस प्रक्रिया को २१ बार दुहरायें तथा इसी प्रकार ७, १४ अथवा २१ दिन तक इस क्रिया की पुनरावृत्ति करते रहे। इस अवधि में साध्य-स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

विशेष—

इस मन्त्र का प्रयोग पुरुष-वशीकरण के लिए भी किया जाता है। पुरुष के लिए प्रयोग करने पर मंत्र में 'फलानी' के स्थान पर साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए। स्त्रियों पर यह मंत्र अपना प्रभाव शीघ्र प्रकट करता है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१६)

मन्त्र—"ॐ हु स्वाहा।"

साधस-विधि

सिद्ध योग, शुभ-मुहूर्त अथवा ग्रहण पर्व में १००० की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि—

काली विष्णु क्रान्ता की जड़ को पान में रखकर, उसे उक्त मन्त्र बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दिया जायगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

https://www.facebook.com/abdul23/nialli/odisha

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१७)

मन्त्र—"ॐ पिशाच रूपिण्यै लिङ्ग परिचुम्बयेत्। नागं विसिंचयेत्"

साधन-विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि

(१) उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रातःकाल २२ बार अपने मुख का प्रक्षालन करें तथा साध्य-स्त्री का नाम ले तो वह बस में हो जाती है।

(२) उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित-जल साध्य-स्त्री को पिला देने से वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१८)

मन्त्र—"मद मद मद मादय खिल ह्रीं अमुक नाम्नी 'अमुकस्व रूपां स्वाहा।"

टिप्पणी—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक नाम्नी' शब्द आया है, वहाँ जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा जहाँ, अमुक स्वरूप स्त्री शब्द आया है। वहाँ उसके स्वरूप अर्थात् वर्ण (रंग), आयु आदि का उच्चारण करना चाहिए, जैसे स्त्री का रंग गोरा तथा आयु उन्नीस वर्ष की हो तो "एकोनविंश वत्सरेण वय समन्वितां' आदि।

इस मन्त्र का जप करने से पूर्व निम्नानुसार कामदेव का ध्यान करना चाहिए—

ध्यान—"कनक रुचिर मूर्तिः कुन्दपुष्पाकृतिर्वै युवति हृदयमध्ये निश्चतादत्तदृष्टिः। इति मनसि मनोजं ध्याययेद्यो जपस्थो वशयति च समस्तं भूवलं मन्त्र सिद्धः।,

साधन-विधि—

ध्यानोपरान्त पूर्वोक्त मन्त्र का १०००० की संख्या में जप करके, जप का दशांक अर्थात् १००० की संख्या में लाल फूलों से होम करें। इस प्रयोग में सभी काम बांये हाथ से करने चाहिये।

प्रयोग-विधि—

मंत्र सिद्ध हो जाने पर साध्य-स्त्री का ध्यान करते हुए १०८ बार मंत्र का जप करने से वह वशीभूत होती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१९)

मन्त्र—"ॐ नमो कामाख्या देवी अमुकीं मे वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा"

विशेष—

उक्त मन्त्र में 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

(१) शनिवार के दिन साध्य-स्त्री के सिर के बाल तथा उसके बांये पाँव के नीचे की धूलि लेकर एक पुतली का निर्माण करें। फिर उसे नीले वस्त्र में लपेट कर, उसकी यानि में अपना वीर्य भरदें तथा भग में सिन्दूर लगादें। तदुपरांत उस पुतली को उक्त मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर साध्य-स्त्री के घर के दरवाजे के बांई ओर गाढ़ दें तो जैसे ही कभी वह उस स्थान को लांघेगी, वैसे ही साधक के वशीभूत हो जायेगी।

अथवा—

(२) सोमवार को जब मृगशिरा नक्षत्र हो, उस दिन अपने वीर्य में सुपाड़ी मिलाकर पान में रखदें तथा उसे २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर साध्य-स्त्री को खिलादें तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२०)

मन्त्र—"ॐ नमो काला भैरूं काली रात, काला चाला आधी रात, काला रे तू मेरा वीर, मरनारी से रहटा मार, पेट जा छाती धरल्याव, सूती होय तो जगाय ल्याव, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

दिवाली अथवा होली की रात को लाल अरण्ड का पेड़ एक झटके में तोड़ लावें उसे जलाकर काजल पारें तथा उस काजल को उक्त मन्त्र से

२१ बार अभिमंत्रित कर, साध्य-स्त्री की आँखों में लगा दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मंत्र (२१)

मन्त्र—"धूली-धूली विकट चंदनी, पट मांरू धूली फिरे दिवानी, घर तजे, बाहर तजे, ठाडो भरतार तजे, देवी दिवानी एक सठी कलुवा न तू नाहरसिंह वीर अमुकी ने उठाय ल्याव मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

साधन एवं प्रयोग विधि

शनिवार के दिन जो स्त्री मरी हो, उसके पग तल के अंगारे को लेकर एक कोरी हांडी में रखकर उस पर ७ बार मंत्र पढ़ें। वह हांडी जिस साध्य स्त्री के शरीर से स्पर्श करा दी जायेगी, वह वशीभूत हो जायगी।

विशेष—

उक्त मंत्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

राजा-वशीकरण मंत्र (१)

मन्त्र—"ॐ ह्री रक्ते चामुंडे अमुकस्य मम वश्यं कुरु-कुरू स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग-विधि—

इस मन्त्र को १००० की संख्या में जपे। फिर कुंकुम, चन्दन, गोरोचन तथा गाय का दूध-इन सब को मिलाकर, मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमंत्रित करें और उसका तिलक लगाकर राजदरबार में जाय तो राजा वशीभूत हो।

राजा-वशीकरण मंत्र (२)

मन्त्र—"ॐ नमो आदेस गुरू को जल बाँधूं, जलहर बाँधूं आणी बांधूं, बार बार बांधूं, शिवपूत प्रचंड बांधूं, रूठा राजा

कांई करसी, आसण छोड़ मंन्ने बैसण देसी, आसण टीको चंदन ललाट, टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं सइया तले में बंध्यान, गौरा पार्वती बंध्याने, मैं बंध्याया, गुरू की शक्ति मेरी भक्ति कुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

धूप, दीप, नवेद्य रखकर, पार्वतीजी का ध्यान कर, शनिवार के दिन से मन्त्र का जप आरम्भ करे तथा २१ दिन तक नित्य १२१ बार मन्त्र जप कर सिद्ध कर लें। फिर कुंकुम, चंदन तथा गोरोचन को गाय के दूध में मिलाकर, उसे अभिमंत्रित करे तथा उसी का तिलक अपने मस्तक पर लगाकर राजा के सम्मुख जाय तो वह वशीभूत हो।

राजा वशीकरण मंत्र

मन्त्र—"ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महीपते मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ जिस राजा (अथवा राज्याधिकारी) को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिये।

साधन एवं प्रयोग विधि—

रविवार के दिन ओंगा (अपामार्ग) के पुष्प लाकर, उन्हें इस मन्त्र से २१ बार अभिमंत्रित करके राजा को खिलादें तो वह वशीभूत हो जायगा।

राज-कर्मचारी वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ बिस्मिल्लाह दाना कुलहु अल्लाह यगाना दिल है सख्त तुम हो दाना, हमारे बीच फलाने को करो दीवाना।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ जिस अधिकारी को वश में करना हो; उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

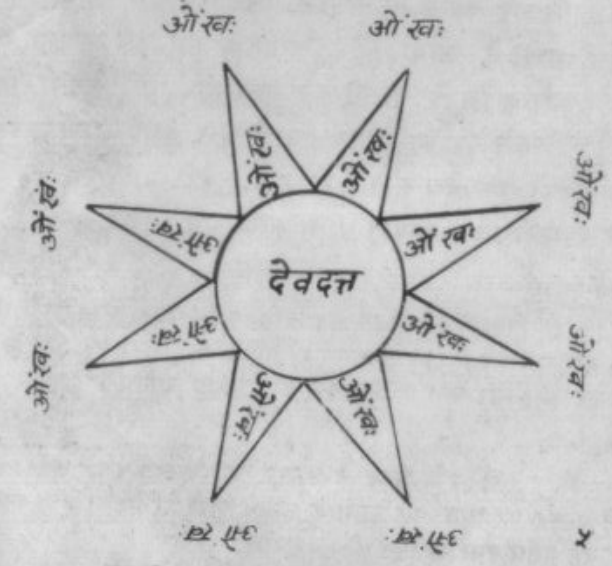
४१ बिनौले लाकर रात्रि के समय प्रत्येक को ४१-४१ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर अग्नि में डालें, तो तीन दिन के भीतर मनोरथ सिद्ध होता अथवा २१ दिनों तक २१ बिनौलों पर २१-२१ बार मन्त्र पढ कर, उन्हें जलायें तो मनोरथ पूर्ण हो जायगा।

शत्रु-वशीकरण प्रयोग

नीचे प्रदर्शित यन्त्र भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से लिखकर गन्ध पुष्पादि चढ़ाकर यथाविधि पूजन करें। फिर उसे किसी शहद भरे पात्र (बर्तन) में डालकर रख दें तो जिस शत्रु को वशीभूत करने के उद्देश्य से यह प्रयोग किया जाय, वह साध्य-व्यक्ति के वशीभूत हो जाता है।

टिप्पणी—

इस मन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-शत्रु का नाम लिखना चाहिए।



(शत्रु-वशीकरण यन्त्र)

वैश्या-वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ द्राविणी स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अपामार्ग (ओंगा) की ७ अँगुल लम्बी लकड़ी को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके वैश्या घर में डाल देने से वह वशीभूत हो जाती है।

राजा क्रोध-शमन एवं वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"हथेली तो हनुमन्त बसे भैरू बसे कपार, नाहरसिंह की मोहनी मोहो सब संसार, मोहन रे मोहन्ता वीर, सब वीरन में तेरासीर, सबकी दृष्टि बाँधि दे मोंहि, तेल सिन्दूर चढ़ाऊँ तोहि, तेल सिन्दूर कहाँ से आया, कैलास पर्वत से आया, कौन लाया, अंजनी का हनुमन्त, गौरी का गणेश, काला गोरा तोतला तीनों बसें कपाल, विन्दा तेल से दूर का दुश्मन गया पाताल, दुहाई कामिया सिंदूर की, हमें देख सीतल हो जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेस गुरू का।"

साधन-विधि—

१४ रविवार को नृसिंह का विधि पूर्वक पूजन कर, इस मन्त्र का १२१ बार जप करें। फिर ७ रविवार तक दीपक, तेल, लोबान एवं लड्डू रख कर १२१ बार मन्त्र का जप करें तो सिद्ध हो जायेगा।

प्रयोग-विधि—

सिन्दूर को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, उसका टीका अपने मस्तक पर लगा कर राजा के सामने जाये तो उसका क्रोध शान्त हो और वह प्रसन्न तथा वशीभूत हो।

https://t.me/tantrikbooks

लौंग वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ जल की जोगनी पाताल का नाग, जिस पै भेजूँ तिसके लाग, सोते सुख न बैठे सुख, फिर फिर देखे मेरा मुख, मेरी बाँधी घूटे तो बाबा नाहरसिंह की जटा टूटे।"

साधन एवं प्रयोग विधि—

४ लौंग पीस कर बताशे में रखें फिर उन्हें गूगल की धूनी, तत्पश्चात् अपने होठ के नीचे रख कर पानी में गोता लगायें। गोता में ७ बार मन्त्र को पढ़ें। फिर पानी से निकल कर, मुँह में से बताशा निकाल कर लौंग के चूरे को गूगल की धूनी दें। तदुपरान्त उस लौंग के चूरे को पान में रख कर अथवा अन्य प्रकार से जिसे खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

इलायची वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो काला कलुआ काली रात, तिसकी पुतली मांजी रात, काला कलुआ घाट बाट सूती को जगा लाव, बैठी को उठा लाव, खड़ी को चला लाव, वेगी धर यां लाव, मोहनी जोहनी चल राजा की ठांव, अमुकी के तन में चटपटो लगाव, जीया ले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची, कभी न छोड़े हमारा साथ, घर को तजे बाहर को तजे, घर के साईं को तजे, हमें तज और कने जाय तो छाती फाट तुरन्त मर जाय, सत्य गुरू आदेस गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, ईश्वर महादेव की वाचा, वाचा से टरे तो कुम्भी नरक में पड़े।"

साधन एव प्रयोग विधि—

शुभ मुहूर्त से आरम्भ कर, २१ दिन तक नित्य १२१ बार मन्त्र को जपने से यह सिद्ध हो जाता है। फिर इलायची पर ११ बार मन्त्र पढ़ कर जिसे खिला दें, वह साधक से वशीभूत हो।

पान वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"कामरूदेस कामारध्या देवी तहां बसे इस्माइल जोगी,
इस्माइल जोगी ने दीन्हा बीड़ा, पहला बीड़ा आतो जाती,
दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाइ,
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरू गोरखनाथ की।"

साधन-विधि—

दीपावली की रात्रि में दीपक जलाकर, धूप दे तथा मिठाई रख कर १४४ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है अथवा किसी रविवार से आरम्भ करके प्रतिदिन २१ की संख्या में २१ दिन तक जप करने से सिद्ध होता है।

प्रयोग-विधि—

बिना तराशे (काटे हुए) ३ पानों का मसालेदार बीड़ा बना कर उसे ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगा।

मन्त्र—"हाथ पसारूँ मुख मलूँ काची मछली खाऊँ।
आठ पहर चौंसठ घड़ी जगमोह घर जाऊँ॥

साधन-विधि—

(१) दीपावली की रात को १०१ बार कागज के टुकड़ों पर एक ओर इस मन्त्र को लिखें तथा उन प्रत्येक कागज के टुकड़ों के दूसरी ओर प्रेमी तथा प्रेमिका और उनकी माता का नाम लिखें तथा—"अमुकी की बेटी अमुकी अमुकी, के बेटा अमुक के पास आवे।" तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

अथवा

(२) सात शनिवार और इतवार को प्रतिदिन १०१ बार इस मन्त्र को पढ़ें तथा दीपक जलाकर गूगल की धूनी दे और मिठाई तथा फूल दीपक के आगे रखें तो मन्त्र सिद्ध होता है।

https://t.me/tantrikbooks

प्रयोग-विधि -

(१) पान के बीड़ा को सिद्ध मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर जिसे खिलादें वह वशीभूत हो।

अथवा

(२) हाथ की हथेलियों पर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़ कर, दोनों हाथों को मुँह पर फेर कर साध्य स्त्री के पास जाय तो वह वशीभूत हो और सभा में जाय तो सब लोग वश में हों।

फूल वशीकरण मन्त्र

मन्त्र—"कामरू देस कामाख्या देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी
इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल बीने लोना चमारी, जो इस फूल को सूँघे बास, तिसका जीव हमारे पास, घर छोड़े घर आँगन छोड़े, लोक कुटम की लज्या छोड़े, दुहाई लोना चमारी की दुहाई धनन्तर की छू।"

साधन-विधि—

शनिवार से आरम्भ कर २१ दिनों तक नित्य १४४ बार मन्त्र का जप करें, दीपक जलायें, लोबान की धूप दें एवं शराब का भोग दें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग-विधि—

फूल को ७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, जिसे सुँघा दिया जाय वह वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण का शैतानी अमल

मन्त्र—(१) "इन्ना आत्वेन शैताना, मेरी शिकल बन अमुकी के पास जाना, उसे मेरे पास लाना, न लावे तो तेरी बहन भानजी पर तीन सौ तीन तलाक।"

प्रयोग-विधि—

खाट के पांइते में नंगा होकर, इस मन्त्र को १०१ बार गुड़ के ऊपर पढ़ें। फिर गुड़ को खाट के नीचे रख कर सो जाय। प्रातः काल वह गुड़ बालकों को बाँट दें तो साध्य-स्त्री ७ दिन के भीतर सामने आकर खड़ी हो जाती है।

विशेष—

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मन्त्र—(२) "अलफ गुरू गुफ्तार रहमान, जाग जाग रे अलहा-दीन शैतान, सात बार अमुकी को जा रान, जो न राने तो तेरी माँ की तलाक, बहन की तीन तलाक।"

साधन एव प्रयोग-विधि—

बेसन का चौमुखा दीपक बना कर उसके चारों कौनों पर चिड़े का रक्त (खून) तथा अपने दांये हाथ की अनामिका अँगुली का खून लगा कर ४ बत्ती रख कर जलायें। फिर स्वयं नंगा होकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें तथा दीपक जला कर लोबान की धूनी दें, फिर भुने हुए चने तथा भुने हुए जौ भोग में रख कर १०८ बार मन्त्र जपे। फिर दीपक को जलता हुआ छोड़ कर, स्वयं नंगा ही सो जाय।

यह प्रयोग जिसके नाम से किया जाता है, शैतान उसके साथ रात भर में ७ बार भोग करता है, फलस्वरूप वह स्त्री व्याकुल होकर साधक के पाँवों पर जा गिरती है तथा उसके वश में हो जाती है।

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

issuu.com/abdul23/mail/odisha

मन्त्र—(३) "अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान, मेरी शकल बन फलानी को जा रान, जो न राने तो तेरी माँ बहन को तीन सौ तीन् तलाक तलाक।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन एवं प्रयोग-विधि—

मन्त्र संख्या २ के अनुसार।

सर्व वशीकरण पुतली मन्त्र

मन्त्र—"ॐ ह्रीं क्लीं जं हिये जं हि ये अमुकीं आकर्षय आकर्षय मम वश्यं कुरु कुरु मोहं कुरु कुरु स्वाहा।"

विशेष—

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री अथवा साध्य-पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

साधन विधि—

सर्व प्रथम आगे प्रदर्शित चित्र के अनुसार एक पुतली की आकृति का निर्माण करें। इस चित्र को केसर, कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा भोज पत्र के ऊपर शुभ घड़ी में निर्मित करना चाहिए। फिर उस चित्र का पूजन करके, उससे अपनी कार्य की सिद्धि के लिए प्रार्थना करें। फिर चित्र को अरंड की नली में रख कर, खैर के अंगारों पर तपायें तथा १०८ बार मन्त्र का जप करें। गूगल की गोली तथा लाल कनेर के फूलों को घी में सान कर अग्नि में १०८ बार होम करें। होम करते समय मन्त्र का उच्चारण करते जांय। इस प्रयोग के करने से ७ दिन के भीतर मनोकामना पूर्ण होती है।



(सर्व वशीकरण पुतली)

issuu.com/abdul23/nialoedisha

४ | उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण प्रयोग

उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के विषय में

'उच्चाटन' का अर्थ है—किसी व्यक्ति को अपने स्थान से हटने के लिए, उसके मन को उच्चाटित कर देना। अर्थात् उच्चाटन मन्त्र का प्रयोग करने पर साध्य-व्यक्ति अपने निवास-स्थान से स्वयं ही हट कर कहीं अन्यत्र चला जाता है। ऐसे प्रयोग प्रायः अपने किसी शत्रु को, उसके आवास-स्थान से हटा देने के लिए किये जाते हैं और आवश्यक होने पर इनका प्रयोग अनुचित भी नहीं माना जाता, क्योंकि इन प्रयोगों से शत्रु अथवा विरोधी केवल अपना स्थान ही छोड़ता है, उसे अन्य कोई कष्ट नहीं होता।

'विद्वेषण' का अर्थ है—किन्हीं दो मित्रों अथवा प्रेमियों में परस्पर विरोध उत्पन्न करा देना। जब कभी यह अनुभव हो कि कोई दो व्यक्ति संयुक्त रूप से हानि पहुँचाने के इच्छुक हैं, उस समय उन दोनों में परस्पर विरोध करा देने से प्रयोगकर्त्ता का हित-साधन होता है। अतः आवश्यकता के समय 'विद्वेषण' का प्रयोग भी अनुचित नहीं माना जाता।

'मारण' का अर्थ है—किसी व्यक्ति की मृत्यु के लिए मन्त्र-प्रयोग करना। यह प्रयोग अत्यन्त गर्हित माना गया है, क्योंकि इससे एक प्राणी की हत्या हो जाती है, अतः मारण-मन्त्र का प्रयोग खूब सोच-समझ कर तथा नितान्त आवश्यक होने पर ही करना चाहिए। स्मरणीय है कि किसी की हत्या के पाप का फल साधक को भी किसी-न-किसी रूप से अवश्य भोगना पड़ता है, अतः यदि अनिवार्य विवशता न हो तो मारण-प्रयोग का साधन हर्गिज नहीं करना चाहिए।